वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

2.5

सूचना पत्र

International Sociological Association

समाजशास्त्र का पेशा

जिगमण्ट बाउमेन

इजाबेला बार्लिन्सका कौन हैं?

सीसेम स्ट्रीट

टमारा के

रियो+20

हर्बट डोकेना

- नारीवाद एवं नवउदारवाद
- सक्रिय यूक्रेनी नारीवाद
- लेटिन अमेरिका में असुरक्षा
- कोलम्बिया में अश्वेत मध्यवर्ग
- रुस में समाजशास्त्र की वास्तविक स्थिति
- मितव्ययिता के युग में ब्रिटिश समाजशास्त्र
- योकोहामा काँग्रेस
- इतालवी विश्वविद्यालय बिक्री के लिये
- यूएन में आईएसए: अपराध एवं न्याय
- फोटो–निबन्ध : प्रवासियों के लिये एक मृत्यु जाल
- ई–सिम्पोजियम के लिये सम्पादक

अंक 2 / क्रमांक 5 / अगस्त 2012

GDN

> सम्पादकीय

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में

मैक्स वैबर ने म्यूनिख के विद्यार्थियों के निमंत्रण पर 1917 तथा 1919 में ''विज्ञान एक पेशे के रुप में'' तथा ''राजनीति एक पेशे के रुप में'' विषयों पर अपने उत्प्रेरित तथा प्रेरणास्पद भाषण दिये थे। एक वैज्ञानिक तथा राजनैतिज्ञ के रुप में उसने अपनी जिन्दगी के सारे अनुभवों को इन भाषणों में उंडेला, समाजशास्त्र को एक पेशे के रुप में विकसित करते हुए लेकिन स्पष्ट तौर पर समाजशास्त्र को एक पेशे के रुप में जांचते हुए नहीं। ***वैश्विक संवाद*** उसकी विरासत से आकर्षित हो कर ''समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में'' नामक नई श्रंखला का शुभारम्भ कर रहा है।

यह उचित ही है कि हम जिगमण्ट बाउमेन के साथ इसकी शुरुआत कर रहे हैं जो कि वैबर के विज्ञान तथा राजनीति के विभाजन से परेशानी महसूस करते हैं। वैबर के वीपरीत बाउमेन के अनुसार आज प्रबन्धकीय कारणों के रुप में विज्ञान शीघ्र ही राजनीति बन जाता है जबकि राजनीति को शक्ति से अलग कर दिया गया है। तब फिर बाउमैन के अनुसार समाजशास्त्र को एक दो तरफा सार्वजनिक संवाद के जरिये विज्ञान तथा राजनीति के विभाजन से आगे बढना ही चाहिये।

इस अंक में इस प्रकार के खुले संवाद का अनुमोदन किया गया है साथ ही पौलिश समाजशास्त्री इजाबेला बार्लिन्सका के सोलिडेरिटि के काल की नागरिक समाज के लेखेजोखे में, टमारा के के विभिन्न देशों की राजनीती एवं संस्कृति में सीसेम स्ट्रीट समझौते पूर्ण अनुकूलन के लेखे में, तथा कोइची हासेगावा द्वारा जापानी समाजशास्त्र को आण्विक शक्ति के खतरों के बारे में सार्वजनिक संवाद के समर्थन में आग्रह द्वारा। काफी समय से महिलाओं एवं योनिक अल्पसंख्यकों के सीमान्तीकरण के विरुद्ध नारीवादी लोग सार्वजनिक संवाद को बढावा देते आये हैं और यहां टमारा मारत्सेनयुक ने युक्रेन में नारीवाद की अभिव्यक्त सडक छाप राजनीती का वर्णन किया है। अन्त में, विज्ञान एवं सामाजिक आन्दोलनों के मध्य इसी संवाद को हर्बट डोकेना हाल ही में सम्पन्न संवहनीय विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र की कान्फ्रेस (रियो+20) में अनुपस्थित पाती हैं । जहां पर कि इसकी बजाय वैज्ञानिक शक्ति प्राप्त करनें के लिए विशेषाधिकृत तटस्थतता का दावा करते रहे – वही तकनीकी कारण जिसकी की बाउमेन अवज्ञा/निन्दा करता है।

बाउमेन लिखते हैं कि हमें विशेष तौर पर अब संवाद की आवश्यकता है – अनिश्चितता एवं असुरक्षा द्वारा परिभाषित तरल समय में इस अंक में हमारे लेख उनकी चिन्ताओं/सरोकारों की प्रतिध्वनि हैं : लेटिन अमेरिका में असुरक्षा पर गहराती अनुभूति (केसलर); एफ्रो–कोलम्बियन्स पर प्रजातिवाद के परिणाम (विगोया); प्रवासियों के विरुद्ध हिंसा से निपटने के लिए यूएन के प्रयास (बारबरेट); तथा किस प्रकार अमेरिकी राज्य इस हिंसा में आलिप्त है (एल्सियोग्लू)। रोमानोवस्की एवं टोश्चेन्को एक नये रुसी समाजशास्त्र की और इशारा करते हैं जो कि पोस्ट–सोवियत आर्थिक असुरक्षाओं से निपट रहा है। अन्त में, अब अस्थिरता नें विश्वविद्यालयों को निंगल लिया है – विद्यार्थियों और अध्यापकों को समान रुप से – अनेक स्थानों पर जैसा कि कोराडी इटली के बारे में बता रही है। जबतक समाजशास्त्र इन असुरक्षाओं को प्रलेखित करता रहेगा, जबतक असुरक्षाऐं प्रतिरोधों को सामने लाती रहेंगी, जो कि वे निश्चित ही करती हैं, तब फिर आशा नष्ट नहीं होगी।

भविष्य के बारे में पूर्ण रुप से निराशावादी – ''बर्फीले अंधकार की एक ध्रुवीय रात'' – प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की हार के बाद, वैबर फिर भी अपने ''राजनीती एक पेशे के रुप में'' को एक आशावादी अलंकरण के साथ यह कहते हुए समाप्त करते हैं की संभव को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि असंभव तक पहुंचा जाये। असंभव को बढावा देना, ऐसा मानकर कि उस तक पहुंचा जा सकता है, समाजशास्त्र का एक बहुत ही उच्च कार्य है और विडम्बना यह कि यह विज्ञान को राजनीती में और राजनीती को विज्ञान में वापस जोड देता है। अतः आज वैबर एवं बाउमेन की शक्तियां साथ जुड गई हैं।

वैश्विक संवाद एक वर्ष में पांच बार तथा 13 भाषाओं में प्रकाशित होता है। यह आईएसए वैबसाइट पर उपलब्ध है। प्रविष्ठियां माइकल बुरावे को burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

तरल आधुनिकता में समाजशास्त्र के पेशे पर। *''समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में'' नामक इस नये स्तम्भ में जिगमण्ट बाउमेन जो कि हमारे आधुनिकता के प्रतिमा स्वरुप व्याख्याकार हैं यह उदघाटित कर रहे हैं उनके लिए समाजशास्त्र के क्या मायने हैं तथा यह कि उसे किस दिशा में अग्रसर होना चाहिये तथा वो जिनसे कि इसे बचना चाहिये ।*

इजाबेला बार्लिन्सका कौन है? *इस साक्षातकार में इजाबेला बार्लिन्सका आईएसए के साथ अपना प्रारम्भिक इतिहास बतला रही हैं और साथ ही यह भी कि आईएसए द्वारा अधिकार में लिये जाने से पहले उन्होने किस प्रकार अपने को उत्तर–सोलिडेरिटि काल में पौलेण्ड से निर्वासित पाया।*

विश्व की सबसे लम्बी सड़क पर बच्चों को शिक्षित करना। *टमारा के उस सांस्कृतिक समझौते तथा रुपान्तरण की प्रक्रिया का विवरण दे रही हैं जिसने कि अनेक देशों में सीसेम स्ट्रीट को बच्चों की शिक्षा का लोकप्रिय टेलीविजन कार्यक्रम बना दिया है।*

> Editorial Board

Editor:
Michael Burawoy.

Managing Editors:
Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Pedro Mancini, Fabio Silva Tsunoda, Célia da Graça Arribas, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Shahrad Shahvand, Saghar Bozorgi, Fatemeh Moghaddasi, Najmeh Taheri.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Takako Sato, Shohei Ogawa, Tomoyuki Ide, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka.

Poland:
Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Jakub Rozenbaum, Kamil Lipiński, Adam Muller, Wojciech Perchuć, Anna Piekutowska, Zofia Włodarczyk.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş.

Media Consultants:
Annie Lin, José Reguera.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में **2**

तरल आधुनिकता में समाजशास्त्र के पेशे पर
जिगमण्ट बाउमेन, यूके **4**

इजाबेला बार्लिन्स्का कौन हैं?
स्पेन में कार्यकारी सचिव से साक्षात्कार **6**

> भविष्य से समझौता

विश्व की सबसे लम्बी सड़क पर शिक्षा
टमारा के, हार्वड विश्वविद्यालय, यूएसए **10**

रियो + 20 में समर्थन करना
हर्बट डोकेना, फिलीपीन्स **12**

> वर्तमान में नारीवाद

नारीवाद एवं नवउदारवाद
सिल्विया वाल्बी, यूके **15**

सक्रिय यूक्रेनी नारीवाद
टमारा मारत्सेनयुक, यूक्रेन **17**

> लेटिन अमेरिका में स्तरीकरण

लेटिन अमेरिका में असुरक्षा का बढ़ता स्तर
गेब्रियल केसलर, अर्जेन्टीना **19**

कोलम्बिया में अश्वेत मध्यवर्ग
मारा विवरोज विगोया, कोलम्बिया **21**

> राष्ट्रीय समाजशास्त्र

रुस में समाजशास्त्र की वास्तविक स्थिति पर
एन.वी. रोमानोवस्की एवं झ.ट. टोशचेन्को, रुस **23**

मितव्ययिता के युग में ब्रिटिश समाजशास्त्र
जॉन डी ब्रीवर, यूके **25**

योकोहामा कॉग्रेंस : अधिक समान विश्व के लिए एक सेतु
कोइची हासेगावा, जापान **26**

इतालवी विश्वविद्यालय बिक्री के लिये
लॉरा कोराड़ी, इटली **28**

> विशेष स्तम्भ

संयुक्त राष्ट्र में आईएसए : अपराध एवं आपराधिक न्याय
रोजमेरी बारबरेट, यूएसए **30**

क्या आप आईएसए के ई–सिम्पोजियम का सम्पादन करने के इच्छुक हैं?
जेनीफर प्लाट, यूके **31**

फोटो–निबंध : प्रवासियों के लिए एक मृत्यु जाल
ऐमिन फिडन एल्सियोग्लू, यूएसए **32**

> तरल आधुनिकता में समाजशास्त्र के पेशे पर

जिगमण्ट बाउमेन, लीड्स विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंग्डम

ब्रिटशा समाजशास्त्र परिषद के अध्यक्ष जॉन ब्रीवर, जिगमण्ट बाउमेन का परिचय कराते हुए, लीड्स, 12 अप्रेल 2012।

जिगमण्ट बाउमेन आधुनिकता से सम्बद्ध एक अत्यन्त प्रभावशाली समाजशास्त्री हैं। 1925 में पॉजनान पोलैण्ड में जन्में बाउमेन अनेक वर्षों तक प्रतिबद्ध वामपन्थी रहे। वारसा विश्वविद्यालय के इस प्रसिद्ध समाजशास्त्री को 1968 में यहूदी विरोधी दौर के कारण बाध्य होकर पोलैण्ड छोड़ना पड़ा। 1971 में लीड्स विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में उन्हें स्थायी पद पर नियुक्ति प्राप्त हुई, जहाँ वह लगातार कार्यरत हैं। 1980 एवं 1990 के दशक में उनकी प्रकाशित पुस्तकों ने उन्हें प्रसिद्धि प्रदान की। इन पुस्तकों में उन्होंने अत्यधिक तार्किकता पर आधारित स्वरूप के रूप में आधुनिकता की आलोचना विकसित की। आधुनिकता के इस स्वरूप को उन्होंने विध्वंस के चरम स्वरूप अथवा स्टालिन वाद के रूप में प्रस्तुत किया। यह भी उनका मत है कि बाहरी लोगों के लिए विश्लेषण की स्थिति में तार्किकता का अवयव सामान्यतः असफल हो जाता है। विधायक एवं विवेचक, उनकी एक मुख्य पुस्तक के अनुसार, उन समस्यामूलक पक्षों का सामना करते है जिन्हें बुद्धिजीवी अपने तरीके से विवेचित करते हैं। ये विधायक एवं विवेचक अपने आप को किस प्रकार आधुनिकतावादी तार्किकता से पृथक करते हैं भी अपने आप में महत्वपूर्ण विषय है जिसे बुद्धिजीवी मूल्यांकित करते हैं। बाउमेन की प्रारम्भिक पुस्तकें उच्च आधुनिकता की जिसे अब वे संस्तरण एवं नियमन की सुदृढ़ आधुनिकता की संज्ञा देते हैं, आलोचनात्मक प्रस्तुति हैं वहीं पिछले दस वर्षों में उनकी अनवरत रूप से प्रकाशित हुई पुस्तकें तरल आधुनिकता पर केन्द्रित हैं। तरल आधुनिकता का सम्बन्ध अप्रत्याशित अनिश्चितता एवं असुरक्षा से सम्बद्ध विश्व से है। दिन प्रतिदिन बाउमेन और अधिक लेखन कर रहे हैं और अधिक भविष्य सूचक और साथ ही प्रभावशाली हो रहे हैं और उपयुक्त रूप से हमारे नये स्तम्भ ''समाजशास्त्र एक पेशे के रूप में'' का प्रारम्भ कर रहे हैं।

लगभग सौ वर्ष पूर्व सुदृढ़ आधुनिकता (एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था पर बल जो उन अपकार्यों एवं स्थितियों से स्वतन्त्र हो जिसने पश्चिमी समाजों को 'प्राचीन दौर' के दुर्भाग्यों से परेशान कर रखा था और प्रारम्भ से ही उन पक्षों के द्वारा विचलित कर दिया गया था जो बाध्यतामूलक, अत्यधिक प्रभावी एवं अत्यधिक प्रयोग से जुड़े आधुनिकीकरण से उभर कर आये थे) के दौर में समाजशास्त्र विश्वविद्यालयों में इस आश्वासन के साथ प्रारम्भ हुआ था कि वह व्यवस्था निर्माण के लक्ष्य में प्रबन्धकीय तर्कों के रूप में भूमिका का निर्वाह करेगा। सौ वर्ष के उपरान्त विचारकों एवं शिक्षकों, जिनमें समाजशास्त्रीय पक्ष स्थापित हो चुके हैं; को उस प्रणाली की तरफ धकेला जा चुका है व निर्देशित एवं दबाया जा चुका है जो व्यावसायिक हितों को संरक्षण देती है। इस प्रणाली की तरफ धकेलने में शक्ति समूहों की केन्द्रीय भूमिका है। यह प्रणाली अब नवीनतम प्रबन्धकीय तर्कों को केन्द्रीय महत्व दे चुकी है। नारे एवं तर्क व्यापक रूप में बदलाव का हिस्सा बन चुके हैं हालांकि अध्यापन एवं अनुसंधान के उद्देश्यों में एवं सम्बद्ध रणनीति में इन शिक्षकों ने कोई बदलाव नहीं किया है। परिणामस्वरूप परिवर्तित हो रहे विश्व के दबावों का अकादमिक समाजशास्त्र पर आंशिक प्रभाव ही पड़ा है। इस असफलता के कारण समाजशास्त्र के पेशे की हमारे समय से सम्बद्ध सार्वजनिक परिवेश से सम्बद्धता लगभग समाप्त हो गयी है। इस विषय पर माइकल बुरावे एवं अन्य दूरगामी दृष्टि वाले सजग पेशेवर हमें पिछले एक दशक से चेतावनी देते रहे हैं।

हमारे विश्वविद्यालयों में जिन तरीकों एवं साधनों को अपनाया जाता है के कारण एक ऐसा संरक्षण मूलक आवरण बन गया है जो अत्यावश्यक एवं अनिवार्य व सबल मुद्दों को विश्वविद्यालय में प्रविष्ठ नहीं होने देता। स्थापित स्नातकीय प्रणाली, पदोन्नति, संकाय सदस्यों में सीमित पर चक्रीय बदलाव, स्वयं को पूर्णता की ओर ले जाना एवं पुनरूत्पादन को अपना कर समाजशास्त्र अपरिमित रूप की तरफ विस्तृत स्वरूप एवं स्टाइल अपना कर अग्रसर हो रहा है जो

>>

कि परिवर्तित हो रहे विश्व से विलग है। इसके साथ ही सेवाओं के विषय में जनता की माँगों, उनके स्वरूपों एवं स्टाइल को जिन्हें देने हेतु बढ़ावा दिया गया था को अब उपेक्षित कर दिया गया है। इसका यह भी अर्थ है कि भिन्न प्रकार की सेवाओं को प्रदान करने की माँगों को भी समाजशास्त्र में या तो रोक दिया गया है या भुला दिया गया है जिन्हें समाजशास्त्र को इस स्थिति में प्रदान करना आवश्यक था। समाजशास्त्र को प्रबन्धकीय एवं प्रौद्योगिकीय मानसिकता के मापन हेतु जिस स्वरूप व स्टाइल को विकसित करना था वह बड़ी तेजी से अब अतीत का पक्ष बनता जा रहा है। तीव्र गति से विस्तार ले रहे नियम हीन, निजित्व एवं व्यक्ति केन्द्रित/व्यक्तिवादिता केन्द्रित विश्व में इन सेवाओं की बहुत आवश्यकता है लेकिन अब तक इन सेवाओं की आपूर्ति सीमित है। इन सेवाओं की आपूर्ति होनी चाहिए थी। एन्थनी गिडिन्स इसे 'जीवन राजनीति' के रूप में देखते हैं। इसका अर्थ है कि पुरूष एवं महिलाऐं इस दायित्व को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग बना चुके हैं कि समाज के द्वारा सृजित समस्याओं का व्यक्ति केन्द्र समाधान खोजा जाय। अलरिच बैक बिना किसी त्रुटि के इसे एक बड़ी चुनौती के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसे 'तरल आधुनिकता' के दौर में समकालीन पीढ़ियों के साथ टकराहट के रूप में देखा जा सकता है। हाल के इतिहास से सम्बन्धित आधी शताब्दी से अधिक समय से समाजशास्त्र स्वयं को अ–स्वतन्त्रता का विज्ञान/प्रौद्योगिकी के रूप में स्थापित करने हेतु संघर्ष कर रहा है क्योंकि समाज शास्त्र प्रबन्धकीय तर्कों की सेवा कर रहा है। सामाजिक स्थितियों के लिए 'डिजायन कार्यशाला' के रूप में समाजशास्त्र सिद्धान्तों में समाधान खोज रहा है जबकि यह समाधान व्यावहारिक रूप में होना महत्वपूर्ण है। टालकट पार्सन्स इस संदर्भ को 'हाब्स आधारित प्रश्नों' के अन्तर्गत प्रस्तुत करते हैं जो आज तक समाजशास्त्रियों की स्मृति का भाग है। मानव जाति को किस प्रकार सम्मोहित/बाध्य/प्रेरित/मतारोपित किया जाए तथा उसे किस प्रकार स्वतन्त्र इच्छा के वरदान अथवा अभिशाप की अस्पष्ट उपहार–वस्तु से अवगत कराया जावे ये सभी पक्ष आदर्श–प्रतिमानों से निर्देशित हैं तथा इनका अनुकरण नियमित रूप से उपयोग अथवा दुरूपयोग के रूप में होता है। परन्तु इसके बावजूद निरीक्षक एवं सामाजिक व्यवस्था पर निगाह रखने वाली इकाइयाँ क्रिया की उस डिजायन की रचना कर लेती हैं जिनकी भविष्यवाणी सम्भावित है। ये इकाइयाँ उस स्वतन्त्र इच्छा को अन्य व्यक्तियों की इच्छा के साथ समाहित कर सकती हैं। परिणामस्वरूप 'ऐच्छिक निगरानी' की प्रवृत्ति कमजोर हो जाती है। आधुनिक युग में इस प्रवृत्ति की तरफ लाबोइटे ने संकेत दिया है उनका यह पूर्वानुमान भी है। यह प्रवृत्ति सामाजिक संगठन के सर्वोच्च नियमों का भाग बन गयी है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि लोगों की कुछ करने की इच्छा को कैसे पनपाया जाय और वे जो कर रहे हैं कैसे लगातार करें.....।

वर्तमान दौर के समाज में भाग्य से बंधी व्यक्तिवादिता को द्वितीय प्रबन्धकीय क्रान्ति ने सहायता प्रदान की है। (द्वितीय प्रबन्धकीय क्रान्ति में प्रबन्धक अपने प्रबन्धकीय लक्ष्यों को दूसरे स्त्रोतों की मदद से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं)। समाजशास्त्र के सम्मुख यह एक उत्साहित एवं प्रसन्नतादायक अवसर है कि वह अपना रास्ता बदले और परिवर्तित होते हुए स्वतन्त्रता का विज्ञान/प्रौद्योगिकीय पक्ष बन कर उभरे। वह उन तरीकों/साधनों को विकसित करे जिससे तरल आधुनिकता के दौर में बाध्य/पाबन्द हुए व्यक्ति स्वंय को इच्छा जनित व्यक्ति के रुप में बदल सकें। जेफ्रे अलेक्जेण्डर के विचार को इसके साथ जोड़ कर कह सकते है कि समाजशास्त्र का भविष्य विशेषतः तात्कालिक भविष्य उन प्रयासों पर निर्भर है जिनके माध्यम से वह स्वयं को मानव स्वतन्त्रता हेतु उभरी सांस्कृतिक राजनीति के रूप में पुनः स्थापित कर सके।

अब इस प्रयास को किस रूप में प्राप्त किया जाय? इसे अपनानें या प्राप्त करने की क्या रणनीति होनी चाहिए। रणनीति यह हो कि 'डोक्सा' या 'कर्ता के ज्ञान' के साथ अनवरत बातचीत हो (समाजशास्त्र ऐसा हो जो पुराने तरीके के प्रबन्धकीय तर्क से सामन्जस्य बैठाये, संज्ञानात्मक मूल्यों की उपेक्षा करे एवं ''असल'', ''उखडना'' एवं ''सही'' को उभारे)। रिचार्ड सेनेट ने ''मानवतावाद'' के वर्तमान अर्थ से सम्बन्धित निबन्ध में विभिन्न सिद्धान्तों एवं हाल में अवलोकित पक्षों को सम्मिलित किया है। इस निबन्ध में अनौपचारिकता के पक्ष, खुलापन एवं सहयोग के अवयव सम्मिलित हैं। ''अनौपचारिकता'' का अर्थ है कि बातचीत/संवाद के नियमों का पूर्व निर्धारण न हो। ये नियम बातचीत/संवाद के दौरान उभर कर आने चाहिए। ''खुलापन'' का अर्थ है कि कोई भी बातचीत/संवाद में निश्चित रूप से अपने सच के साथ प्रवेश नहीं करता है साथ ही अन्यों को प्रभावित करने का उसका उद्देश्य नहीं होता (नियन्त्रक, पूर्व निश्चित, गलत/त्रुटिपूर्ण विचार) और ''सहयोग'' का अर्थ है कि उस बातचीत में सभी सहभागी शिक्षक एवं सीखने वाले दोनों साथ साथ हैं; ये सहभागी न तो विजेता हैं और न ही पराजित लोग हैं। यदि किसी की उपेक्षा हुई है तो उसकी कीमत सामूहिक रूप से चुकानी होगी। सामूहिकता, किसी सलाह पर, महज सामूहिक हो सकती है जो समाजशास्त्र के लिए अनुपयुक्त है।

समाजशास्त्र, समाज की गत्यात्मकता के दौरान अनेक पक्षों की विवेचना होती हैं और उसे समझना होता है, वर्तमान में जीवन्त है। कीथ टेस्टर जो हल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं ने हाल में यह सुझाव दिया है कि 'प्रश्नों के उलझाव' के दौर में कार्यप्रणालियों के पुराने तरीके प्रतिदिन अनुपयुक्त होते दिखने लगे हैं, जबकि नवीन व प्रभावी माने जाने वाले तरीके जिन्हें यह माना जाता रहा है कि वे पुरानों को प्रतिस्थापित करेंगे अभी योजना के स्तर तक पहुँचे नहीं हैं। यह वह समय है जब सब कुछ अर्थात् कमोबेश सब कुछ हो सकता है। लेकिन अब ऐसा बहुत कम है कि किसी को भी निश्चिता के साथ स्वीकारा जा सके या उस पक्ष के साथ सफलता की व्यापक सम्भावना हो। मुझे सन्देह है कि इन स्थितियों के साथ हम जिस भविष्य की तरफ अग्रसर हो रहे हैं के विषय में कोई भी अनुमान लगाना या भविष्यवाणी करना न केवल अनुत्तरदायीपूर्ण होगा अपितु भटकाव वाला भी होगा (उस निर्धारित या अपेक्षित भविष्य से कम स्तर पर भी पहुँचने के परिणाम भी इसी श्रेणी में आते हैं)। तरल–आधुनिक समस्याओं के मूलाधार पर उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं के माध्यम से पहुँचना असम्भव है। उन अभिकरणों की अभी अनुपस्थिति है जो इन पक्षों को दक्षता के साथ स्वीकारें एवं उन स्थितियों की जो परिणाम उत्पन्न करें, की स्पष्ट परिभाषा कर सकें।

इसका कदापि अर्थ यह नहीं है कि हम प्रयास करना बन्द कर दें। पर इसका अर्थ यह है कि हम प्रयास करना बन्द न करें और हमारा हर आगे आने वाला प्रयास अन्तरिम समझौता हो या एक ओर प्रयोग हो जिसका पूर्ण रूप से परीक्षण हो। इसके पहले कि वह अपने को ''निर्णायक गन्तव्य'' घोषित कर दे अथवा हमारे पेशे को ''सम्पूर्णता'' के रूप में घोषित कर दे। ■

> इजाबेला बार्लिन्सका कौन है?

आई.एस.ए. में प्रत्येक व्यक्ति इजाबेला बार्लिन्सका के नाम को जानता है – तथा वह भी लगभग प्रत्येक को जानती है! योग्य तथा रचनात्मक, निष्ठावान तथा समर्पित, मृदुभाषी परन्तु दृढ़, वह आईएसए से कोई 35 वर्षों से जुडी हुई है। अनेक भाषाओं की अधिकारी जिनमें अंग्रेजी, फ्रेन्च, स्पेनिश, रशियन और उसकी अपनी मातृभाषा पौलिश भी सम्मिलित है इजाबेला आईएसए में प्रमुख पद पर है और मैड्रिड से अपनी गतिविधियों को निर्देशित करती है। अपने समर्पित सहकर्मियों नाचो तथा जुआन की मदद से वह समस्त कार्य करती है जिसमें वित्त से लेकर सदस्यता, मिनिट्स लेने से लेकर शोध समितियों को तथा राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषदों को सलाह देने, कार्यक्रम बनानें से लेकर हमारी बहुसंख्यक एवं निरन्तर जटिल होती हुई बैठकों को आयोजित करने जैसे कार्य सम्मिलित हैं। समस्त उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष उसके ज्ञान और बुद्धिमानी पर निर्भर रहते हैं। यह सब कुछ विनम्रता, चातुर्य तथा ठंडे दिमाग की स्थिति में किया जाता है।

वह 1987 में आईएसए की कार्यकारी सचिव बनी थी और उसके प्रबन्धन के दौरान आईएसए निरंतर शक्तिशाली होता गया है और इसकी सदस्यता में तब के 1200 से आज 5000 से अधिक का विस्तार हुआ है तथा आज इसके आगोश में कोई 55 राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषदें तथ 55 शोध समितियां सम्मिलित हैं। उसने आईएसए के साथ अपनी यात्रा वारसा की एक युवा छात्रा के रुप में शुरु की थी और आईएसए के साथ साथ कनाडा से नीदरलैण्ड गई और वहां से स्पेन। इसी दौरान उसने अपनी पीएच. डी. पूरी की और उसे स्पेनिश में एक पुस्तक के रुप में *सिविल सोसाइटी इन पौलेण्ड एण्ड सोलिडेरिटी* के नाम से प्रकाशित करवाया । पौलेण्ड में विपक्ष से सम्बन्धित होने के कारण वह कहती है कि उसे अपने पद के कारण अनायास ही उत्पन्न नाजुक परिस्थितियों में चुप रहने का प्रशिक्षण मिला हुआ है।

माइकल बुरावे ने उसका साक्षात्कार मैड्रिड में 27 सितम्बर 2011 को लिया था। उस साक्षात्कार का प्रथम भाग जिसमें कि वह अपने पौलेण्ड से निर्वासन और आईएसए के साथ अपने पहले वर्षों के बारे में बतलाती है यहां प्रकाशित किया जा रहा है। इस साक्षात्कार का दूसरा भाग वैश्विक संवाद के अगले अंक में आयेगा जिसमें उसके कार्यकारी सचिव बनने के बाद मैड्रिड में आईएसए के दृढीकरण पर चर्चा की गई है।

मेड्रिड के कोम्पलुटेन्स विश्वविद्यालय में आईएसए के ऑफिस में जुआन लेजारागा के साथ इजाबेला बार्लिन्सका।

माइकल बुरावे: इजाबेला, इस पृथ्वी पर आप आईएसए के साथ इस आश्चर्यजनक और उत्तेजक कार्य के साथ किस प्रकार जुडी?

इजाबेला बार्लिन्सका: बहुत अच्छा, यह बिल्कुल जीवन में घटित एक दुर्घटना के जैसा ही था। इसकी शुरुआत 1977 में हुई थी जब कि मेरी चाची मेग्डालेना सोकोलोवस्का जो कि आईएसए की कार्यकारी समिति की सदस्या थी। मुझे याद है वह बसंत था, क्योंकि मैं वारसा विश्वविद्यालय की अपनी परीक्षा में व्यस्त थी। उन्होने मुझे फोन किया कि क्या मैं अगले दो या तीन दिन उनके पास आ सकती हूं क्यों कि वह एक अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रही हैं और उन्हें मेरी मदद की दरकार है। क्या आप जानते है कि उन्हें एक छोटी लडकी की आवश्यकता थी जो लोगों से हवाई अडडे पर मिलने, उन्हें होटल में ठहराने, उनके सामान की वस्तुस्थिति को मालुम करने और ऐसे ही अनेक कामों में उनकी मदद कर सके।

मा. बु.: उन्होंने विशेषकर आपको क्यों बुलाया?

इ.बा.: क्यों कि मैं रुसी तथा अंग्रेजी जानती थी और मैं उपलब्ध थी। लेकिन मेरी परीक्षा अगले ही दिन थी और इसलिए यह कठिन था। लेकिन मेरे पिताजी ने कहा कि मुझे जाना ही होगा – मै मना करने वाली कौन होती हूं? अगर आप 20 साल के हैं तो मेरा अनुमान है कि आपको अभी भी अपने मातापिता की सुननी पडती है। और इस प्रकार अगले दिन मैं हवाई अडडे पर बैठी हुई थी। विश्वास कीजिये वह पौलेण्ड था – साम्यवादी पौलेण्ड जहां कोई भी विदेशी भाषा नहीं बोलता था। और इस प्रकार मैं यहां पर थी हवाई अडडे पर इन्तजार करती हुई तथा यह सोच रही थी कि मेरे से क्या उम्मीद की जा सकती है जब कि मैं अपनी परीक्षा के लिए पढ़ रही हूं। लेकिन साथ ही खास किस्म की सहानुभूति कुर्त जोनासन तथा सैलीन सेन्ट–पीयरे के लिए उपजी जो कि तब आईएसए के कार्यकरी सचिव थे तथा सचिवालय मैड्रिड मे स्थित था। उन्होंने मुझे कहा – देखो अगली गर्मियों में हम समाजशास्त्र का विश्व कॉग्रेस स्वीडन के उपासला में करने जा रहे हैं तथा हम यह उम्मीद करते हैं कि पूर्वी यूरोप खासतौर पर रुस से बहुत अधिक लोग आयेंगें। हम चूंकि पहले से ही आपको जानते है तथा आप अंग्रेजी तथा रुसी बोलती हैं चुनांचे आप हमारे साथ काम करना पसन्द करेंगी।

मा.बु.: निश्चय ही वह एक आकर्षक आमंत्रण रहा होगा?

इ. बा. : निःसन्देह! कल्पना करो कि आपको एक महिने स्वीडन में काम करने का प्रस्ताव मिला है? मैंने दुबारा नही सोचा। हां, मुझे जाने में खुशी होगी। और मै गई भी। उल्फ हिमलस्ट्रेण्ड, जो कि इस कांग्रेस में आईएसए के चुने जाने वाले अध्यक्ष थे ने मुझे फेरी से ले लिया था। मैं पौलेण्ड से आने के संभवतः सबसे सस्ते रास्ते से आयी थी जो कि बाल्टिक सागर को फेरी के जरिये पार करना था। मैंने तब उपासला में एक महिना बिताया तथा कार्यक्रम को निश्चित किया। और तब कांग्रेस के सप्ताह के दौरान मुझे अपनी डेस्क मिली जिस पर लिखा हुआ था ''सामान्य शिकायतें''। मैं आईएसए में इससे अच्छी शुरुआत नहीं कर सकती थी। लेकिन यहां मैं एक दादी माँ की समस्या को हल कर रही थी जिसकी पोती खो गई थी जो कि संभवत स्टोकहोम में घुडसवारी करने चली गई थी। ठीक, आप कल्पना कर सकते हैं कि ''सामान्य शिकायतें'' में क्या हो सकता है। लेकिन मैं अपने नये काम में सफल रही थी क्योंकि कुछ वर्षों बाद मुझे कुर्त जोनासन व सैलीन सेन्ट–पीयरे से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें कि उन्होंने कहा था कि मुझे एक छोटी विद्यार्थी मदद मिली है जो कि मैक्सिको में 1982 में आयोजित होने वाली विश्व कांग्रेस के लिए तैयारी करवाने के लिए है और क्या मैं 1981 के अन्त तक मॉन्ट्रीयल आना चाहूँगी। निःसन्देह, मैने कहा – कनाडा में आधे साल तक की स्कालरशिप – इसे कौन मना करेगा? मैने पासपोर्ट के लिए आवेदन कर दिया और जैसा कि आप जानते हैं कि एक साम्यवादी देश में पासपोर्ट प्राप्त करना एक आसान काम नहीं होता है। लेकिन मैंने अपना पासपोर्ट प्राप्त कर लिया और मैं जाने के लिए तैयार थी।

मा.बु.: लेकिन यह समय सोलिडेरिटि का था – पौलेण्ड में अशांति थी – सही?

इ.बा.: हाँ, सोलिडेरिटि मेरी जिन्दगी का हिस्सा रहा है। स्कूल के सालों से ही मैं राजनैतिक विरोध पक्ष के सम्पर्क में रही हूं अथवा शामिल रही हूं वास्तव में मै अपनी इतिहास की अध्यापिका जो कि स्कूल में थी की आभारी हूं । वह हमें अपनी जगह पर आमंत्रित करती थी और वास्तविकता तथा पौलेण्ड और यूरोपियन इतिहास पर चर्चा किया करती थी जो कि उस अधिकारिक दृष्टिकोण जो कि हमे पढाया जाता था से बिलकुल अलग होती थी। उसके जरिये और एक सेमीनार में साथियों के जरिये मैं उन लोगों के सम्पर्क में आयी जो कि पौलेण्ड में उस समय बन रहे राजनैतिक विरोध में थे। एक बार आगे बढने के बाद मैंने पीछे मुड कर नहीं देखा।

अतः जब 1980 में हडताल शुरु हुई मेरी भूमिका विदेशी पत्रकारों, जो कि पौलेण्ड मे आये थे से बात करना थी और जब पौलेण्ड में मार्शल लॉ लागू हो गया था – वह प्रसिद्ध 1981 का 13 दिसम्बर – मैं संकट में थी। पुलिस मेरे घर में कागजों की तलाशी लेने के लिए घुस गई। उन्होने मेरा टाइपराइटर जब्त कर लिया और मेरे फोन टेप करने शुरु कर दिये शायद मेरे विदेशी टीवी स्टेशनों और पत्रकारों से प्रत्यक्ष सम्पर्कों के कारण। अन्य सभी चीजों की तरह मेरी दिसम्बर 1981 की कनाडा यात्रा भी लटक गई। तथापि कुछ समय बाद पौलिश सरकार ने ऐसा दिखाया कि जिन्दगी फिर से सामान्य हो गयी है और लोग स्वतन्त्र हैं। राजनीती खेलते हुए उन्होने सीमाए खोलनी आरम्भ कर दीं।

मार्शल लॉ के शुरु होने के बाद हरएक को अपना पासपोर्ट वापिस लौटाना था और तभी अचानक आसमान से टपकने जैसा एक टेलीफोन मेरे पास मार्च 1982 में आया ''आपका पासपोर्ट यहां पर है आपने इसे वापिस क्यों नहीं लिया?'' अब मेरे पास केनेडियन वीजा पहले से ही था, मेरे पास सब कुछ था परन्तु मैं जाना नहीं चाहती था। मैंने विपक्षी लोगों से विस्तृत चर्चा की। और उन्होने कहा कि मुझे जाना ही होगा क्योंकि आप विदेश में हमारे लिए अधिक उपयोगी होंगी बनिस्पत कि यहां पौलेण्ड में रह कर। इसलिए मैं गयी परन्तु मैं बहुत खुश नहीं थी क्योंकि मैं सोचती थी कि मेरी जगह पौलेण्ड में है। और जब मैं कनाडा पहुंची तब हर कोइ सोच रहा था कि मैं राजनैतिक शरण मांगने जा रही हूं। लेकिन वह वो अन्तिम चीज थी जो मैं चाहती थी। यह मेरी अपनी लडाई थी, मेरा अपना पासपोर्ट था और मैं खुद थी। इस प्रकार मैने आईएसए के मॉन्ट्रीयल स्थित सचिवालय में काम शुरु किया जहां हर कोई आश्चर्यजनक रुप से दयालू तथा मेहमाननवाज था। वहां मैं जैक्स डोफ्ने तथा ऐलेन तोरेन की अच्छी दोस्त बन गई जो कि तब आईएसए में उपाध्यक्ष थे। वास्तव में मैं पहले से ही ऐलेन तोरेन को जानती थी पौलेण्ड में सोलिडेरिटि की हडताल के समय से ही। इस प्रकार आईएसए के साथ मेरी जिन्दगी की शुरुआत हुई।

मा.बु.: आपके कनाडा के लिए रवाना होने से पहले आईएसए के साथ और भी बातचीत हुई थी जब उल्फ हिमलस्ट्रेण्ड पौलेण्ड आये थे।

इ.बा.: उन्हें आईएसए द्वारा पौलेण्ड में क्या हो रहा है देखने के लिए भेजा गया था। वह 1982 की तेज सर्दी थी। वारसा में हर जगह तोपें थी तथा सेना ने हर चीज को अपने कब्जें में ले रखा था। मैं उल्फ

से मिलने हवाई अडडे पर गई थी, हम गलियों में घूमें थे तथा बहुत से समाजशास्त्रियों से मिले थे। हमने सोचा था कि उल्फ का प्रतिवेदन काफी ठीक था और सरकार इसे पढ कर खुश होगी। बहुत बाद में मुझे यह मालूम हुआ कि वह अपनी सूचना के स्त्रोतों पौलिश समाजशास्त्रियों को खतरे में डालने के बाबत बहुत कूटनितिज्ञ और सावधान थे।

मा.बु.: उन दिनों आईएसए की कार्यकारी समिति शीत युद्ध से किस प्रकार निपट रही थी?

इ.बा.: यह दोनों पक्षों में संतुलन बनाने के प्रति सावधान थी। और मै समझती हूं कि वे यह जानते थे कि जबतक कार्यकारी समिति में सोवियत संघ से कोई नहीं होता है समस्या रहेगी। इस मायने मे मेरा सोचना हैं कि चुनाव तथा कार्यकारी समिति का गठन निश्चित तौर पर राजनैतिक था।

मा.बु.: इस प्रकार आप मैक्सिको विश्व कांग्रेस 1982 की तैयारी के लिए मॉन्ट्रीयल गयीं और मैक्सिको के बाद आप आईएसए के साथ स्थाईरुप से जुड गई?

इ.बा.: हां, मैक्सिको में फर्नान्डो हेनरिक कारडोसो अध्यक्ष चुने गए थे और यह पहले से ही तय हो गया था कि सचिवालय एम्सटरडम जाएगा। मैं नये कार्यकारी सचिव फेलिक्स गेयर जो कि समाजशास्त्री थे के मातहत काम करने वहां चली गई। हम एम्सटरडम में चार साल रहे। यह वह समय था जब विश्वविद्यालय विशेष ही आईएसए की मेजबानी और इसका प्रायोजन करता था। अतः हमारा कार्यालय एम्सटरडम विश्वविद्यालय में ही था।

मा.बु.: क्या उस समय आपके पास आईएसए के अलावा और भी कोई जिम्मेदारी थी?

इ.बा.: ठीक, मुझे अपनी नई परिस्थिति में परिपक्व होना था और अवश्य ही मैंने उन प्रसिद्ध विपक्षी लोगों से मिलना शुरु कर दिया जो कि पौलेण्ड छोड चुके थे, पहले उत्तरी अमेरिका और बाद में एम्सटरडम में जो कि पौलेण्ड के अधिक नजदीक था। और मैंने अपनी छोटी कहानियां लिखना भी शुरु कर दिया था। यह लगभग दोहरा अस्तित्व जैसा था जो कि हमेशा आसान नहीं होता परन्तु दिलचस्प था। यह मेरी पीढी की क्रान्ति थी और मै भाग्यशाली थी कि इसमें मुझे हिस्सेदारी करने का अवसर प्राप्त हुआ। और यह मेरे लिए अर्थपूर्ण था । सभी संबद्ध परिणामों के बावजूद । और देखिये क्या हुआ – 30 साल व्यतीत हो गये हैं और अब हम – ''आजाद देश'' हो गये हैं। हमने व्यवस्था को उखाड फेंका है।

मा.बु.: हाँ। सोलिडेरिटि अन्त का शुरुआत थी। लेकिन आप उस व्यवस्था के बारे में क्या सोचती हैं? आपने कभी भी राजनैतिक शरण नहीं ली? ऐसा क्यों?

इ.बा.: मुझे कभी भी ऐसा नहीं लगा कि शरण मांगी जाए क्यों कि ऐसा करने से मेरे परिवार को अप्रत्यक्ष परिणाम भुगतने पड सकते थे। लेकिन मैने बहुत सोचा कि पौलेण्ड के बारे में मुझे अपने विचार उन व्यक्तियों तक किस प्रकार पहुचाने चाहिये जो कि साम्यवाद को बिल्कुल नही जानते। मैं प्रतिरोध के महत्व पर जोर देना चाहती थी – कि जो कुछ मैने किया और जो करने जा रही थी वह सही था – लेकिन व्यवस्था पूरी तरह से दिवालिया नहीं थी। ठीक, जिस प्रकार शासन काम कर रहा था कुछ चीजें स्पष्ट तौर पर गलत थी। लेकिन मुझे स्कूल में बहुत शालीन शिक्षा मिली थी। मैं भूख से कभी पीडित नहीं रही। निःसन्देह मैं वारसा के मध्यम वर्गी परिवार से आयी थी – मेरे माता पिता दोनो काम करते थे और हमारा रहन–सहन का स्तर बहुत शालीन था। मैंने पाया कि बहुत सारी बातों में मैं अपने ''स्वतन्त्र देशों'' के साथियों की अपेक्षा बेहतर तरह से शिक्षित थी तथा अच्छी तरह से तैयार थी। शिक्षण, शिक्षा और ज्ञान का पौलेण्ड में प्रतिष्ठापूर्ण स्थान था। हमें ताले में बन्द कर दिया गया था परन्तु हम इसे जानते थे, और हम न केवल यह जानने कि लिए उत्सुक थे कि हमे क्या पढाया जा रहा है परन्तु दूसरे देशों के इतिहासों को भी। जैसा कि मैंने आपको बताया कि मैं भाग्यशाली थी कि मुझे इतिहास की एक शानदार अध्यापिका मिली थी। उसने मेरी जिन्दगी बदल दी। और तब हम हमेशा सुनते थे कि दुनियां भर में क्या हो रहा है। आप को अवैधानिक रुप से पश्चिम से लाई गई किताब पढने को मिलती हैं। आप पूरी रात उसे पढनें में बिताते हैं क्यों कि अगले दिन आपको उसे किसी दूसरे को देना होता है। यह सामान्य प्रक्रिया थी।

मा.बु.: ये वे कहानियां हैं जो कि आप लोगों को बतलाना चाहती हैं ताकि वे यह समझ सकें कि पौलेण्ड में होनें का क्या अर्थ था। आप सोलिडेरिटि के बारे में क्या सोचती थीं?

इ.बा.: मैं उत्तेजित थी। बाद में मैं और अधिक समीक्षात्मक हो गई। लेकिन यह एक शक्ति थी जिसे रोका नहीं जा सकता था। मार्शल लॉ लागू होने के बाद सोलिडेरिटि आधिकारिक रुप से बन्द कर दी गई और भूमिगत हो गई थी, लेकिन यह अभी भी अस्तित्व में थी। देश में वो बहुत ही विशिष्ठ साल थे जबकि लोग नई प्रकार से संगठित हुए थे। दूध खरीदनें के लिए दुकान के सामने कतारें नागरिक समाज का हिस्सा थी। लोग जिन्दा रहने के लिए संगठित हो रहे थे, या कुछ पाने के लिए लड रहे थे, या उस व्यवस्था के इर्दगिर्द थे जो कि उनकी जिन्दगी को मुश्किल बना रही थी। उस समय एकता की बहुत विशिष्ठ भावना थी।

मा.बु.: हां। और चर्च की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी।

इ.बा.: चर्च ने सभी प्राकर के विरोध के लिए एक छतरी का काम किया। इसने तब भी मदद की जब मॉर्शल लॉ लागू हो गया और हमारे कई साथी लम्बे समय तक जेलों मे डाल दिये गये और उनकी माताऐं तथा बच्चे अकेले छोड दिये गये । दुकाने खाली थीं। टलीफोन काम नहीं कर रहे थे। ट्राम काम नहीं कर रही थीं। हम सभी पगुं हो गये थे। उस समय बहुत सारी चुनौतियां थीं।

माबु.: आपने इन बातों का जिक्र अपने शोध निबन्ध में भी किया है जिसे आपने *''सिविल सोसाइटी इन पौलेण्ड एण्ड सोलिडेरिटी''* पुस्तक के रुप में स्पेनिश में प्रकाशित करवाया था। क्या मैं सही हूँ?

इ.बा.: हां, मैने अपने शोध निबन्ध में सेालिडेरिटी और सिविल सेासाइटी के बारे में लिखा था लेकिन निःसन्देह कम निजी रुप में। मेरी पीएच. डी सोलिडेरिटी के सामाजिक आन्दोलन के रुप में ज्यादा नहीं थी क्यों कि बहुत से लोगों ने इसके बारे में लिखा था परन्तु इस पर अधिक थी कि जिन्दगी किस प्रकार आयोजित हो रही थी और देश में लोग अपने दैनिक कार्यों को किस प्रकार सम्पादित कर रहे थे। उसमें विपक्ष पर अध्याय थे और किस प्रकार लोगों ने दूसरी अर्थव्यवस्था को संगठित कर लिया था, चीनी को दालों के साथ लेनदेन करके, इत्यादि। यहां मेड्रिड में कोम्पलुटेन्स विश्वविद्यालय में मेरे निदेशक, विक्टर परेज–डियाज, ने जोर दिया कि मैं एक अध्याय पौलेण्ड में प्रर्दशनों के इतिहास पर लिखुं ताकि वे लोग भी जो कि पौलेण्ड के पाठक नहीं हैं उस संदर्भ को समझ सकें।

मा.बु.: साम्यवाद के दौरान पौलिश विपक्ष के बारे में क्या कहना चाहेंगी?

इ.बा.: प्रारम्भिक पौलिश विपक्ष नें साम्यवाद पर कोई सवाल नहीं उठाया; वे शासन में संशोधन के प्रयास कर रह थे, व्यवस्था को

संशोधित करना – इसमें सुधार की मांग – वे चाहते थे ''समाजवाद एक मानवीय चेहरे के साथ'', जैसा कि वे इसे सम्बोधित करते थे।

मा.बु.: यह शुरुआत में था 1950 के दशक के दौरान। लेकिन क्या आप सोचती हैं कि सोलिडेरिटी आन्दोलन नें उसी चीज का प्रतिनिधित्व किया?

इ.बा.: एक अर्थ में हां; अगर आप सोलिडेरिटी की प्रारम्भिक मांगों को देखते है, उन्होने स्वतन्त्र व्यापार संगठनों की मांग को शामिल किया, लेकिन यह सर्वाधिक राजनैतिक मांग थी। अन्य सभी साम्यवाद को जीने लायक बनाने से सम्बन्धित थीं जैसे कि स्थिर कीमतें, काम की अच्छी शर्तें और ऐसी ही अन्य। व्यवस्था पर वास्तव में कोई भी सवाल नहीं उठा रहा था। हम केवल इतना चाहते थे कि इसी के अन्दर जीवन जीने की परिस्थितियों में सुधार हो।

मा.बु.: लेकिन मैड्रिड जाने के पहले, जबकि आप एम्सटरडम में थी, 1982–86 में, आप विपक्ष के लिए एक सम्पर्क सूत्र थीं ऐसे बहुत सारे लोगों के लिऐ जो वहां से गुजरते थे, भूमिगत प्रकाशनों को आप के पास जमा कराते थे, और आप को वहां क्या घटित हो रहा है की ताजा जानकारियां देते हुए।

इ.बा.: यह ठीक है। मेरे पास ऐसे अतिथियों के लिए हमेशा एक अतिरिक्त बिस्तर रहता था। मेरा परिवार पत्रकारों से अच्छी तरह से सम्बन्धित था और वो अक्सर मेरे यहां ठहरते थे। सही बात तो यह है कि मै रिस्जार्ड कैपुसिन्सकी से इसी तरह मिली थी।

मा.बु.: आपका मतलब है वह प्रसिद्ध रिस्जार्ड कैपुसिन्सकी? आप उसे जानती हैं? जो कुछ उसने लिखा है उसके अनुसार वह आश्चर्यजनक व्यक्ति रहा होगा – उसकी ईरान, इथोपिया और रुस पर सारी पुस्तकें बहुत प्रतिभाशाली हैं!

इ.बा.: मेरा उनसे मिलना एक मजेदार घटना है। यह तब की बात है जब वे अपनी एक पुस्तक को प्रोन्नत करने के लिए एम्सटरडम आये थे। वह मेरे परिवार से मेरे लिए कुछ ला रहे थे। मैं एक अटारी में रह रही थी जो कि ठेठ एम्सटरडम के घरों जैसी थी – सकड़ी और बहुत सी सीढीयों वाली। कैपुसिन्सक को मेरे लिए बहुत सी पुस्तकें, जिनमें अधिकांश प्रतिबन्धित प्रकाशन थीं, लेकर उन सीढीयों पर चढना पडा। वह मेरे कमरे में आये और कहा ''आह, मैं लेटना चाहता हूं।'' उनकी पीठ के निचले हिस्से में कोई समस्या थी और बहुत सी पुस्तके लेकर इतनी सारी सीढीयां चढने के कारण उन्हें बहुत दर्द हो रहा था। अतः यहां वह प्रसिद्ध कैपुसिन्सकी, जिससे कि मैं पहले कभी भी नहीं मिली थी, मेरे घर के कठोर फर्श पर अगले पांच घण्टों तक लेटा रहा था। वह हिल भी नहीं सकता था। और इस प्रकार हम दोस्त बन गये।

मा.बु.: क्या वह अपने पत्रकारिता के उद्देश्यों के अलावा किसी भी समय पौलेण्ड से बाहर नहीं गया?

इ.बा.: हां, वह हमेशा वहीं रहते थे। और निःसन्देह हमने बहुत सारी बातें की। उस समय मैं बिल्कुल नही जानती थी कि मुझे अपनी जिन्दगी में क्या करना है। और तब उन्होने मुझसे कहा, ''देखो, संसार के 98 प्रतिशत मनुष्य खुश हैं क्योंकि वे एक शान्त और व्यवस्थित जीवन जीते है। लेकिन दो प्रतिशत लोग ऐसे प्रश्न पूछते है जैसे कि तुम अपने आप से पूछ रही हो।'' उसने और कुछ नहीं कहा। और तब आगे कहा, ''वो जो इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं उन पर दायित्व है कि वे ऐसे प्रश्न पूछते रहें।'' ■

अगले अंक में जारी

> विश्व की सबसे लम्बी सड़क पर बच्चों को शिक्षित करना

टमारा के, हार्वड विश्वविद्यालय, यू. एस. ए.

दक्षिणी अफ्रीका के बच्चे कामी, ऐड्स द्वारा बेघर की गयी एचआईवी पोजेटिव पीले रंग के फर मे लिपटी 5 साल की लडकी, के साथ खेलते हुए। ©2007 सीसेम कार्यशाला। सर्वाधिकार सुरक्षित। रियान हैफैमेन द्वारा खींचा गया फोटो। विभिन्न देशों में सीसेम स्ट्रीट की कतरनें देखनें के लिए जाऐः http://www.sesameworkshop.org/

भारत के नगरीय कच्ची बस्ती में बच्चे टी.वी. और डी.वी.डी. प्लेयर से सुसज्जित सब्जी के पुराने ठेले के चारों तरफ हिन्दी में 'माँ' अक्षर के बारे में गाते हुए चरित्रों से बंधे हुए जमघट लगाये रहते हैं। तन्जानिया में बच्चे मलेरिया से बचने के लिए बिस्तर पर मच्छर की जाली को किस प्रकार से काम में ले सकते हैं, सिखाने वाले रेडियो कार्यक्रम को सुनते हैं और दक्षिण अफ्रीका जहाँ दस में से एक बच्चे ने अपने माता–पिता को HIV/AIDS के कारण खो दिया है, टेलीविजन कार्यक्रम बीमारी के कलंक को कम करने व बच्चों को अपने दुख से उबरने में मदद करता है। इन सभी बच्चों में कम से कम दो बातें तो समान हैं : जब भी वे विद्यालय जायेंगे तो अधिक सौभाग्यशाली बच्चों से काफी पिछड़े रहेंगे और उन्हें सिसेम स्ट्रीट का स्थानीय संस्करण, जिसे उनके द्वारा सामना किये जा रहे वंचन को कम करने के लिए सृजित किया गया, दिखाया जा रहा है।

सिसेम स्ट्रीट की सर्वविद्यमानता और सफलता विशेषतः वैश्वीकरण के दौर में होने वाला संस्कृति का असाधारण राजनैतिकीकरण दो अर्न्तसम्बन्धित गूढ़ प्रश्न प्रस्तुत करता हैः कैसे एक प्रतिष्ठित अमरीकी सांस्कृतिक उत्पाद

>>

समय के साथ पारदेशीय चैनल पर प्रसारित होता है और कैसे यह वास्तविक और प्रमाणिक रूप से स्थानीय के रूप में वैधता और स्थानीय स्वीकृति पाता है?

शिक्षाप्रद, गैर लाभकीय सिसेम कार्यशाला (SW, पूर्व में द चिल्ड्रेन टेलीविजन वर्कशॉप) इन प्रश्नों के उत्तर के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करती है क्योंकि यह प्री–स्कूल आयु के बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार करने हेतु दुनिया भर में सिसेम स्ट्रीट के स्थानीय संस्करण या सह–प्रस्तुतियाँ तैयार करती है। इसके साथ ही, SW स्थानीय सहयोगियों – सरकारें, नागरिक समाज संगठन एवं एन.जी.ओ. जो संयुक्त राष्ट्र के मिलिनियम डेवलपमेण्ट गोल्स, साक्षरता एवं स्वास्थ्य (जिसमें तन्जानिया में मलेलिया बचाव, भारत में टीकाकरण, लेटिन अमरीका के हृदय स्वास्थ्य और पोषण, दक्षिण अफ्रीका में HIV/AIDS के कलंक को कम करना) से लेकर सामाजिक समानता (इजराइल/फिलिस्तीन, कोसोवा, दक्षिण अफ्रीका और उत्तरी आयरलेण्ड के संघर्ष क्षेत्रों में धार्मिक और नृजातीय सहिष्णुता) इत्यादि को प्राथमिकता देते हैं, के साथ आउटरीच परियोजनाएँ करती है। ये आउटरीच परियोजनाएँ गतिशील दंत क्लिनिक, मॉडल विद्यालय, जन सेवा घोषणाएँ एवं सामग्री (किताबें, शिक्षाप्रद खेल, डी.वी.डी. और माता–पिता के लिए गाइड़ आदि) के जो स्थानीय सहयोगियों के पाठ्यक्रम उद्देश्यों को सुदृढ़ करती है, विशिष्ट रूप से उन स्थानों के लिए जहां बच्चों की टेलीविजन तक पहुंच नहीं है।

लेटिन अमरीका, अफ्रीका और मध्य पूर्व में लिये गये गहन साक्षात्कार और नृवंश विज्ञान दर्शाते हैं कि संभावित विवादित मुद्दों (लैंगिक समानता, प्रजातियों और नृजातीय 'अन्य' के लिए पारस्परिक आदर आदि) के उठाये जाने के बावजूद सिसेम परियोजनाओं को स्थानीय स्वीकृति प्राप्त होती है। बड़ी मात्रा में यह स्वीकृति इस बात पर निर्भर करती है कि किस प्रकार SW स्थानीय सहयोगियों के साथ अपने सम्बन्धों की संरचना करती है और बातचीत के द्वारा अपने प्रवेश को सुनिश्चित करती है।

पारदेशीय कार्य में संलग्न संगठनों में SW का सहनिर्माता मॉडल अनूठा है क्योंकि यह अपने सह–निर्माण और आउटरीच परियोजनाओं की विषय–वस्तु और पाठ्यक्रम के चुनाव के लिए स्थानीय विशेषज्ञों की टीम तैयार करता है। कुछ पाबंदियों और निरीक्षण के बावजूद सहयोगियों को अपनी परियोजनाओं को रूप देने की अत्यधिक स्वतन्त्रता होती है। अतः SW केस, संकरीकरण और अन्ततः प्रसार की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने वाली कई छिपी हुई संधियों को उजागर करता है।

कोसोवो में, गोद लेने की शर्तों पर बातचीत ने SW को केन्द्रिय मूल्य–अक्षरों द्वारा साक्षरता–पर पुनः विचार करने पर मजबूर कर दिया। एल्बेनिया और सर्बिया के लोग एक समान अक्षर (न तो लेटिन और न ही सिरिलिक) पर सहमति नहीं बना पाये। भाषा के मुद्दे के साथ ही, सहयोगी प्रत्येक समूह के बच्चों के साथ खेलते हुए दृश्य को शूट नहीं करना चाहते थे क्योंकि माता–पिता अपने बच्चों को नृजातीय–एकीकृत कार्यक्रम देखने की अनुमति नहीं देंगे। हालाँकि यह समस्या परियोजना को खत्म कर सकती थी, SW और इसके सहयोगियों ने बातचीत से नवीन समाधान ढूँढा; उन्होंने एक दृश्य (Visual) शब्दकोष विकसित किया जिसमें बच्चें विभिन्न वस्तु, जैसे धूप का चश्मा, को हाथ में पकड़ कर उनके समकक्ष शब्द को विभिन्न भाषाओं में बोलते हैं।

गोद की शर्तें फिलिस्तीनियों के लिए भी महत्वपूर्ण थी। 1994 में उन्होंने इजराइलियों के साथ पारस्परिक आदर और समझ पर केन्द्रित सह–प्रस्तुति में भाग लेने से मना कर दिया था। उन्हें डर था कि उच्च गुणवत्ता वाला सिसेम स्ट्रीट का संस्करण उनके नये और कमजोर फिलिस्तनी टेलीविजन केन्द्र की पहचान को खत्म कर देगा और इजराइली और अमरीकियों के साथ सहयोग करना उन्हें रूढ़िवादियों का निशाना बना देगा। टीम के मुख्य सदस्यों ने हालाँकि इसे युवा फिलिस्तनियों को प्रशिक्षित करने व स्थानीय मीडिया के लिए बुनियादी सुविधाओं के निर्माण के एक अवसर के रूप में देखा। उन्होंने निधि कोष में से एक बड़ी राशि को निर्माण से प्रशिक्षण में परिवर्तित कर देने का आग्रह किया। कार्यक्रम को स्वीकारने का फिलिस्तिनियों का निर्णय, उनके द्वारा अधिक मूल्यवान उत्पाद और प्रक्रिया समझी जाने वाली स्थिति के लिये वार्ता करने की क्षमता पर टिका था।

SW के बंग्लादेशी और दक्षिण अफ्रीकी सहयोगियों के लिए सहप्रस्तुति की सामग्री पर बातचीत अत्यन्त महत्वपूर्ण थी ताकि वह स्थानीय आबादी के साथ और स्थानीय आवश्यकताओं को सम्बोधित करे। बांग्लादेशियों ने अपने कार्यक्रम में मपेट (muppet) के प्रयोग पर घबराहट व्यक्त की क्योंकि उनकी संस्कृति में कठपुतली कला की मजबूत परम्परा है। यद्यपि SW को मपेट के प्रयोग के लिए सहयोगी नहीं चाहिए था (अर्थात् जिम हेन्सन कम्पनी द्वारा निर्मित कठपुतलियाँ), बंगलदेशी टीम ने अन्ततः अपने स्वयं के मपेट डिजाइन करने (जिसमें बंगाल टाइगर और सियार के पात्र थे) और सिसिमपुर में पारंपरिक बंग्लादेशी लकड़ी की छड़ी वाली कठपुतलियों को सम्मिलित करने का निर्णय लिया। स्थानीय टीम और SW ने इनको शामिल करने के लिये ''इक्री की दुनिया'', जहाँ पारम्परिक बंग्लादेशी कठपुतलियाँ रहती हैं और उनकी कहानियाँ इक्री नामक मपेट की कल्पना के द्वारा गीतों के माध्यम से सुनाई जाती हैं, में पारगमन करने की अनूठी योजना बनाई। दक्षिण अफ्रीका ने तकालानी सिसेम दल के दूसरे सीजन में अपने देश के HIV/AIDS संकट से निपटने के लिये कार्यक्रम और आउटरीच परियोजना में भागीदारी की। प्रारंभिक चिंताओं के बावजूद, SW ने उनके साथ HIV/AIDS के पाठ्यक्रम और कामी नामक HIV पोजिटीव मपेट पात्र को विकसित करने पर कार्य किया।

साक्ष्यों से पता चलता है कि SW मॉडल का परियोजना के परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। सहप्रस्तुति और आउटरीच परियोजनाओं की सफलता आश्चर्यजनक रही है। नियन्त्रित अध्ययन बतलाते हैं कि सिसिमपुर देखने वाले बंग्लादेशी बच्चों में नहीं देखने वाले बच्चों की तुलना में 6.7 प्रतिशत अधिक साक्षरता स्कोर थे। मिस्र में अलाम सिमसिम के चार वर्षीय दर्शकों ने गणित और साक्षरता परीक्षाओं में 5 वर्षीय बच्चों, जो कभी कार्यक्रम देखते थे या फिर बिल्कुल नहीं देखते थे, के बराबर स्तर पर प्रदर्शन किया। तथ्य यह भी बताते हैं कि स्थानीय अनुकूलन SW की वैधता और अतः उसकी पहुँच में वृद्धि करता है। SW, प्रत्येक सह–प्रस्तुति के शैक्षणिक प्रभाव का पता लगाने के लिए ही नहीं बल्कि यह आकलन करने के लिए भी क्या सह–प्रस्तुतियों को स्थानीय के रूप में देखा जाता है (ज्यादातर देखे जाते हैं), के लिए स्वतन्त्र शोध कमीशन करता है। अपने प्रीमियर के अठारह महीनों के अन्दर ही, 2000 में मिस्र के अलाम सिमसिम ने 98 प्रतिशत दर्शकों की संख्या और कार्यक्रम के बारे में जागरूकता प्राप्त कर ली थी और अब यह अमरीकी संस्करण के जितना ही प्रतिष्ठित है।

भारत में सरकार द्वारा चलाये जा रहे 5200 डे–केयर केन्द्रों ने गली गली सिम सिम को अपने पाठ्यक्रम के हर पहलू में समाहित कर लिया है। दुनिया में शायद बच्चों में शिक्षा के प्रसार के लिए सिसेम स्ट्रीट शायद सर्वाधिक प्रसारित वाहन है।

संधि वार्ता के रूप में प्रसार के सिद्धान्त सांस्कृतिक वैश्वीकरण को अपनाने वाले के प्रतिरोध को भड़काने व बाधित करने वाले कारकों को समझने के लिए नया अकाट्य ढाँचा प्रस्तुत करता है। इसके अलावा, यह सुझाव देता है कि ऐसे युग में जहाँ पारदेशीय संगठन और उनके सांस्कृतिक उत्पाद दुनिया भर में कहीं भी शीघ्र भेजे जा सकते हैं, सफल विकास की परियोजनाएँ और स्थानीय रूप से स्वीकार्य सांस्कृतिक हाइब्रिड़ (मिश्रण) पारदेशीय संगठनों के मध्य अधिक न्यायसंगत पारदेशीय बन्धनों के निर्माण पर निर्भर करते हैं। प्रसार प्रक्रिया हालांकि पाश्चात्य मूल्यों प्रथाओं और उत्पाद के प्रभुत्व और अधिरोपण को प्रतिबिंबित कर सकती है परन्तु SW का केस दुनिया की सबसे लंबी सड़क पर संस्कृति कैसे नेगोशीयेट होती है के माध्यम से, अपनाने वालों के स्त्रोतों के उत्तोलन, प्रभाव और स्वायत्तता को उजागर करता है। ■

> समर्थन करना : संवहनीय विकास पर रियो+20

यूएन सम्मेलन में विज्ञान

हर्बट डोकेना, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू.एस.ए.

पिछली 20 जून 2012 को संवहनीय विकास पर रियो +20 पर संयुक्त राष्ट्र की कान्फ्रेंस के अवसर पर जन शीर्ष–सम्मेलन (People's Summit) द्वारा विरोध में रियो डि जैनेरो की सडकों पर परेड के रुप में प्रदर्शित किया गया एक शिल्प।
फोटो हर्बट डेकोना द्वारा।

कुछ सालों के दौरान, हजारों सरकारी अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, व्यापा–रियों और यहाँ तक कि हस्तियों को आकर्षित कर, यू.एन. सम्मेलन विशाल होते जा रहे हैं। इस जून में रियो दि जनेरियो में आयोजित संवहनीय विकास का इतिहास में सबसे बड़े कहे जाने वाले यू.एन. सम्मेलन में प्रतिभागियों का एक और समूह : वैज्ञानिक अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए ध्यान आकर्षित कर रहे थे।

यदि व्यापारी प्रबंधकों ने होटलों में अपनी 'व्यापार दिवस' की बैठकें, कार्यकर्त्ताओं ने पार्क में 'पिपुल्स समिट' आयोजित की तो वैज्ञानिकों ने भी सरकारी शिखर सम्मेलन के समानांतर, इपानेमा में कैथोलिक विश्वविद्यालय के नजदीक एक ''फोरम ऑन साईन्स, टैक्नोलॉजी एण्ड इनोवेशन'' का आयोजन किया। व्यापारियों और कार्यकर्त्ताओं की अन्य पार्श्व बैठकों के विपरीत यह स्पष्ट नहीं था कि यह किस प्रकार का सम्मेलन है या फिर यह क्या हासिल करना चाहता है। परन्तु इसने क्या किया यह इस बात का द्योतक हो सकता है कि वैज्ञानिक समुदाय भी पर्यावरण ीय संकट से जूझ रहे अन्य कर्त्ताओं के साथ स्वयं को किस प्रकार से स्थित कर रहा है।

>>

> यह किस तरह का विद्वत्वपूर्ण सम्मेलन था?

एक ओर जहां कई प्रस्तुतियाँ विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में नवीनतम ज्ञान को प्रदर्शित कर रहीं थी, यह प्रकट रूप में विद्वत्वपूर्ण सम्मेलन के रूप में आयोजित नहीं था। प्रत्येक क्षेत्र में प्रस्तुत निष्कर्षों को देखने और उन पर बहस करने के लिए पर्याप्त विशेषज्ञ नहीं थे। अधिकतर प्रतिभागी मुख्य आयोजन समिति इन्टरनेशनल काउंसिल फॉर साइन्स (ICSU) के या तो अधिकारी या फिर सदस्य थे, साथ ही में सहयोगी आयोजकों जैसे UNESCO जैसी अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान एजेन्सी, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान परिषद (ISSC, जिसका मैं एक प्रतिनिधि था), विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के कुछ पेशेवर, साथ ही सरकारी अधिकारी, व्यापार क्षेत्र के प्रतिनिधि–जिसमें डाउ केमीकल के उपाध्यक्ष और ब्लैकबैरी के CEO भी सम्मिलित थे।

यदि इसका उद्देश्य विषयों के बीच गहरे जोड़ विकसित/प्रोत्साहित करना था तो प्रतिभागियों के बीच सार्थक अन्तर्क्रिया के लिये बहुत कम समय दिया गया था। पाँच दिनों के लिए, प्रतिभागियों को पेनल के बाद पेनल, प्रत्येक जिसमें 7 से 8 वक्ता दो घंटों तक प्रतिभागियों को सम्बोधित करते रहे और प्रश्न–उत्तर के लिए सिर्फ अंतिम 10–15 मिनट ही रखे गये।

बहस के लिए कई अवसर थे जैसे एक भूगोलवेत्ता ने राहत व्यक्त कि वह एक पर्यावरणीय अर्थशास्त्री नहीं है जिसे जीवन की कीमत या जंगल के मूल्य को मापने के कोई वीरतापूर्ण पुर्वानुमान लगाना है। इस कथन से उन्होंने समाज विज्ञानों के अंदर एक लंबे समय से चल रहे विवाद को छू लिया और साथ ही भूगोलवेत्ताओं द्वारा अर्थशास्त्र में उनसे अधिक शक्तिशाली साथियों के प्रति नाराजगी का भी संकेत मिला। या फिर जब एक इंजीनियर ने सादे ढंग से यह कहा कि समाज वैज्ञानिकों की भूमिका हमारे (इंजीनियरों) द्वारा दिये गये समाधानों का ''सांस्कृतिक औचित्य'' निर्मित करना है। इससे उसने ''प्राकृतिक वैज्ञानिकों'' और ''सामाजिक वैज्ञानिकों'' के मध्य श्रम के विभाजन को लेकर विवाद की जड़ को छू दिया। या फिर, जब लगातार वक्ताओं ने भौतिकविदों, रसायनशास्त्रियों और इंजीनियरों को ''प्राकृतिक वैज्ञानिकों'' के रूप में सम्बोधित किया जैसे कि समाज वैज्ञानिक जिसका अध्ययन करते हैं वह किसी प्रकार से प्रकृति का हिस्सा नहीं है या प्राकृतिक है। बहुत समय पूर्व दुर्खीम द्वारा सुझाई गई धारणा कि समाज ''प्रकृति में अवलोकित भौतिक और नैतिक शक्तियों का सर्वाधिक शक्तिशाली संग्रह है'', को समाजशास्त्र के परे खिंचाव हासिल करने में असफलता प्राप्त हुई है।

विश्वदृष्टि में स्पष्ट भिन्नता और शक्ति के अदृश्य मुद्दों को उजागर करते हुए विषयों के मध्य और परे तनाव के क्षण उन मुद्दों की श्रंखला की तरह इंगित करते हैं जिनका इस प्रकार की दुर्लभ (एवं महँगी) पार–वैषयिक सम्मेलनों में होने वाले गहन, विचारशील संवाद के माध्यम से स्पष्टीकरण हो सकता था।

> व्यापार और सरकार में साझेदारों की तलाश

मुख्य आयोजकों के भाषणों व हस्तक्षेप और कई प्रस्तुतकर्त्ताओं ने शीघ्र ही यह स्पष्ट कर दिया कि यह सम्मेलन वैज्ञानिकों को अपनी पारस्परिक गलतफहमियों को एक स्तर से आगे ले जाने में मदद करने के बारे में नहीं था। वास्तव में, इसके प्राथमिक श्रोताओं के रूप में शायद वैज्ञानिक थे ही नहीं।

सप्ताह के दौरान, कई वक्ताओं (हालाँकि सभी नहीं) ने कर्त्ताओं के दो समूहों को मुख्य रूप से सम्बोधित किया, इनमें से कुछ श्रोताओं में थे : सरकार (या अंतर्राष्ट्रीय संगठनों) के अधिकारी और व्यापारी। वक्ता के बाद वक्ता ने अपने संबोधन को वैज्ञानिकों और हितधारकों के मध्य तथाकथित खाई से शुरू किया–ऐसी खाई जिसे वे वैज्ञानिकों की शोध गतिविधियों में हितधारकों की तथाकथित अरूचि और उनके शोध पहलों में समर्थन का अभाव के रूप में देखते हैं। वे फिर जरूर इस खाई को पाटने के लिए वैज्ञानिकों और निर्णय कर्त्ताओं के मध्य करीबी साझेदारी के लिए आह्वान करेंगे।

अपने शोध परिणामों पर अधिक स्वामित्व देने के लिए वक्ताओं ने धन प्रदाता (funders), व्यापारियों और नीति निर्माताओं को उनके शोध को उनके साथ सह–डिजाइन और सह–निर्माण के लिए आमंत्रित किया। अन्य शब्दों में, उन्हें शोध प्रश्नों को चिन्हित करने और उनके निष्कर्षों के लिए मूर्त अनुप्रयोगों को तलाशने में मदद करना। नागरिक समाज के अन्य क्षेत्रों के बारे में उल्लेख किया गया परन्तु इनमें से कुछ ही को वास्तव में सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था। अधिक समर्थन के बदले में वैज्ञानिकों ने "GEC" – ''ग्लोबल इनवायरमेण्टल चेंज'' को समझने और ''संवहनीय विकास'' को प्राप्त करने के लिए सामाजिक रूपांतरणों के प्रबंधन करने वाले ज्ञान को नीति निर्माताओं एवं व्यवसाय प्रबंधकों के साथ साझा करने का प्रस्ताव दिया। तथाकथित ''ग्रीन अर्थव्यवस्था'', जिसके निर्माण में वैज्ञानिक स्वयं भी मदद कर रहे हैं, के विभिन्न पहलुओं को मापने के लिए नये मेट्रिक्स और सभी नई अवधारणाएँ भी इस प्रस्ताव में सम्मिलित थीं।

कुछ आलोचनात्मक आवाजें भी थीं–उदाहरण के लिए ISSC और इसके प्रतिनिधियों ने कई बार ''प्राकृतिक वैज्ञानिकों'' के तकनीकी पूर्वानुराग को वर्तमान पर्यावरणीय संकट की ऐतिहासिक और व्यवस्था की जड़ों पर जोर देते हुए चुनौती दी। कम से कम एक वक्ता ने सामाजिक आंदोलनों के साथ अधिक मजबूत गठबंधन की वकालत की जैसा इक्वेडोर में तेल कम्पनियों से "Keep oil in the hole" की लड़ाई करने वाले कार्यकर्त्ताओं और स्वदेशी लोगों में है।

अधिकांश भाग के लिए, तथापि, सम्मेलन मुख्य रूप से विज्ञान–राज्य–व्यापार संवाद की पुरानी तकनीकी मान्यताओं एवं प्रबंधकीय दृष्टि में जकड़ा रहा : समस्या यह है कि निर्णय – कर्ताओं के पास सही निर्णय लेने के लिए आवश्यक ज्ञान नहीं हैं, परन्तु यदि वैज्ञानिकों द्वारा सही ज्ञान उपलब्ध कराया जाये तब सब कुछ ठीक होगा। पर्यावरण के क्षरण के पीछे शक्ति संरचना या व्यवस्था के दबाव नहीं बल्कि अनभिज्ञता है। परिवर्तन उपर से बेहतर प्रबंधन के साथ आयेगा न कि नीचे से प्रतिरोध के द्वारा।

एक पहल जो इस मान्यता से पोषित होती है और जिसे सम्मेलन में सर्वाधिक लाभ प्राप्त हुआ ICSU का 'फ्यूचर अर्थ प्रोजेक्ट' थी। यह एक महत्वाकांक्षी दस वर्षीय शोध पहल थी जो हजारों वैज्ञानिकों को ''समाज द्वारा अपने संवहनीय विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान'' हेतु लामबंद करने का लक्ष्य रखती है। दुनिया के सर्वाधिक धनी शोध समर्थकों द्वारा अभी से ही समर्थित यह पहल एक वक्ता द्वारा ''अब तक की देखी गई अनूठी साझेदारी'' के रूप में व्यक्त की गई। इस प्रस्तुति के प्रत्युत्तर में, ब्लैकबैरी के CEO ने ''कार्यात्मक शोध'' की आवश्यकता पर सहमति जताई और फिर वैज्ञानिकों को विचारधारा के खतरों के बारे में चेतावनी भी दी।

कुछ आलोचनात्मक पहलों के बावजूद, कार्यक्रम की अन्तर्वस्तु और संरचना, विशेष रूप से व्यापार और सरकार के मध्य साझेदारी के बार–बार आह्वान ने सम्मेलन को चमकदार और उस धन, जो कि पर्यावरणीय संकट के 'प्रबंधन' और 'अनुकुलन; के लिए सामाजिक

>>

सरकारी शीर्ष–सम्मेलन स्थल से 40 किलोमीटर दूर रियो डि जैनेरो के एतिहासिक शहर के मुख्य बाजार (कवूदजवूद) मे स्थित प्लाजा फ्लोरियानो पर जन शीर्ष–सम्मेलन (People's Summit) के प्रदर्शनकारी कब्जा करते हुए। फोटो हर्बट डेकोना द्वारा।

व जियो–इंजीनियरिंग प्रोजेक्टों को सरकारें व व्यापारी आवंटित करने लगे हैं, में से अधिक हिस्सा प्राप्त करने हेतु वैज्ञानिक नौकरशाहों द्वारा आकर्षक विक्रय कला के रूप में सोचने पर मजबूर कर दिया है।

> प्रश्न जो पूछे नहीं गये...

आकर्षक साझेदारों की खोज का यह मतलब नहीं है कि सम्मेलन का आयोजन करने वाले नौकरशाह और वैज्ञानिक लालची शोध व्यापारी हैं। यह भी हो सकता है कि ये अपने सम्भावित साझेदारों के साथ निम्न मौलिक प्रश्नों का चेतन या अचेतन स्तर पर समान उत्तर साझा करना चाहते हैं। ये वे प्रश्न हैं जिन पर सम्मेलन में आगे और बहस हो सकती थी परन्तु नहीं हुई।

क्या हमें वास्तव में प्रकृति को ''पर्यावरण–सेवाओं'' के प्रदाता के रूप में सोचना चाहिए और क्या हमें इन सेवाओं पर मूल्य लगाना चाहिए?

रियो में अन्यत्र, सरकारी शिखर सम्मेलन में, कार्यकर्त्ताओं द्वारा समर्थित विकासशील देशों के वार्त्ताकारों ने अंतिम घोषणा में ''पारिस्थितिक–तंत्र सेवाएँ'' सम्बोध के प्रयोग पर भी प्रतिरोध किया। यह प्रयोग यू. एस. और अन्य विकसित देशों द्वारा समर्थित था क्योंकि उन्हें डर था कि यह प्रकृति के ''वित्तीयकरण'' को और गहरा कर देगा। परन्तु यहाँ इस सम्मेलन में, वैज्ञानिक इस शब्द को बगैर रूके रोजाना में इस्तेमाल कर रहे थे। जब इसे चुनौती दी गई तो एक भूगोलवैत्ता (''फ्यूचर अर्थ'' का एक मुख्य प्रवर्तक) का जवाब था : नेचर पत्रिका का नवीनतम अंक पढ़े, इसका विज्ञान द्वारा समाधान कर लिया गया है।

क्या अंतहीन वृद्धि का पर्यावरणीय संरक्षण से सामंजस्य करना वास्तव में संभव है जैसा ''संवहनीय विकास'' और आज की ''ग्रीन अर्थव्यवस्था'' के प्रवर्तक वादा करते हैं?

रियो में अन्यत्र पिपुल्स समिट में अंतहीन वृद्धि को संवहनीय रूप से गैर–नैतिक माना गया। समान रूप से ग्रीन अर्थव्यवस्था को ''ग्रीन पूंजीवाद'' के रूप में तिरस्कृत किया गया। यह प्रकृति को संजोने के लिए आवश्यक संरचनात्मक परिवर्तनों का कम करने की कोशिशों के रूप में देखा गया। परन्तु यहाँ इस सम्मेलन में वैज्ञानिक अपनी विशेषज्ञता को सरकारों और व्यापारियों की असंभव को संभव करने की कोशिशों में मदद के रूप में प्रदर्शित कर रहे थे।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय वार्ताओं में सर्वाधिक लंबे समय से चल रहे मतभेदों के स्त्रोत का पुनःस्मरण करने के बाद, हमारे पर्यावरणीय संकट के लिए कौन वास्तव में जिम्मेदार है और हमें उनसे कैसे संबद्ध होना चाहिए?

रियो में अन्यत्र, कई ने पारदेशीय कार्पोरेशन एवं धनी देशों की सरकारें, जिन्हे यहाँ एक समाज वैज्ञानिक ने ''शक्ति अभिजात्य'' कहा, को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया। ''पिपुल्स समिट' में उन्हें नियमित रूप से ''अपराधी'' और 'हत्यारे' कहा गया। परन्तु यहाँ विज्ञान सम्मेलन में, उन्हें साझेदार जिन्हें आकृष्ट करना है और शोध के ''सह–डिजाइनर'' व ''सह–निर्माता'' के रूप में देखा गया। एक मानवशास्त्री ने तर्क दिया कि ''हमें शक्ति अभिजात्य को शत्रु के रूप में नहीं देखना चाहिए।'' यह रचनात्मक नहीं है..... मैं नहीं समझता कि हमारे पास राजनैतिक परिवर्तन का समय है। हमें उन्हें अपना साथ रखना है और कोई रास्ता नहीं है।''

> तटस्थता की शक्ति

सरकारों और व्यापारों के साथ साझेदारी करने की तलाश में, वैज्ञानिकों ने एक महत्वपूर्ण विक्रय बिन्दु का बारंबार उल्लेख किया–कुछ ऐसा जो कि रियो में सभी भूल गये थे; उनकी तथाकथित ''तटस्थता'', उदासीनता/विरक्ति, अरूचि। उन्होंने अपनी तथाकथित निष्पक्षता को, शायद अचेतन रूप में, जाहिर किया जब कभी भी उन्होंने ''विज्ञान और समाज के बीच में नये समझौते'' (जैसे कि हम समाज से अलग या उसके उपर हैं) की बात की। या फिर जब उन्होंने हितधारकों या निर्णयकर्ताओं के साथ अधिक संपर्क जोड़ने की वकालत की। (जैसे कि हमारे कोई हित नहीं है और हम जिस तरह से समस्याओं को फ्रेम व प्रस्तुत करते हैं और जिन उत्तरों को हम मान कर चलते हैं के कारण निर्णयों में सम्मिलित नहीं होते हैं) या फिर जब वे इस बात पर जोर देते हैं कि उनके निष्कर्ष सिर्फ ''नीति–प्रासंगिक'' होने चाहिये न कि ''नीति–संदर्भिक''। (जैसे कि प्रासंगिक नीतियों को उन तक सीमित करना जो यह मानती है कि ''ग्रीन अर्थव्यवस्था'' के अलावा कोई और रास्ता नहीं है, हम कुछ भी नियत नहीं कर रहे हैं।)

और अब तक, बार–बार कहीं जाने वाली तटस्थता के बावजूद, ऐसा लगता है कि वैज्ञानिकों ने यहाँ तरफदारी कर ही ली है। ■

> विवादित परिणाम: नारीवाद एवं नवउदारवाद

सिल्विया वाल्बी, लंकास्टर विश्वविद्यालय, यू.के. एवं पूर्व अध्यक्ष, आई.एस.ए. अर्थव्यवस्था एवं समाज की शोध समिति (RC 02)

अनकट के (Unct's) ''बिग सोसाइटी बेल–इन्स'' के हिस्से के रुप में परिवार एवं बच्चे केमडेन (Camden) में आरबीएस/नेट–वेस्ट बैंक पर कटौतियों तथ जिस प्रकार से ये विशेषकर महिलाओं को प्रभावित करेंगी के विरुद्ध प्रदर्शन के रुप में धावा करते हुए। लंदन, 26 फरवरी 2011।

वित्तीय संकट के व्यापक प्रभाव विवादित हैं। क्या यह संकट (2007–12) अर्थव्यवस्था और समाज के या तो वाम (सामाजिक लोकतांत्रिक या समाजवादी) अथवा दक्षिणपंथी (नवउदारवादी या फासीवादी) दिशा में अर्थव्यवस्था और समाज के अतिवादी पुनर्गठन का अवसर है? यह लेख तर्क देता है कि संलग्न प्रक्रियाओं और संरचनाओं में लिंग मध्य में है और नवउदार परियोजना और सरकारी कार्यक्रम लैंगिक हैं।

> नवउदारवाद के स्त्रोत

वित्तीय पूंजी का विकास जहां एक ओर वैश्विक प्रक्रिया है वहीं राष्ट्रीय सामाजिक संरचनाओं में अभी भी महत्वपूर्ण भिन्नताएं हैं। यह हमें नागरिक समाज, राज्य और अन्य राजनीतिक संस्थानों में निहित राजनैतिक ताकतों पर निर्भर, हमारे सामने घटित होने वाले संकट के विभिन्न परिणामों के बारे में पूछताछ करने की अनुमति देता है।

यूरोपीय संदर्भ में संकट का वर्तमान चेहरा (जिसे थोड़े परिवर्तन के साथ अन्य पर लागू किया जा सकता है) सरकारी व्यय में कटौती करने के लिए अत्यधिक दबाव है। सरकारी बजट घाटे और संचित ऋण ऐसे प्रस्तुत किये जाते हैं जैसे वे अक्षरणीय हैं। इन दबावों की भी कई व्याख्याएँ हैं।

एक व्याख्या यह है कि इस तरह के घाटे और ऋण का स्त्रोत कल्याण पर अत्यधिक खर्चा है, अर्थात् इसका उपाय व्यय में कटौती है। हालाँकि, इसे घाटे के स्त्रोत की व्याख्या के रूप में कमतर आंका जाता है क्योंकि ये अधिकतर वित्तीय संकट के कारण कर राजस्व में होने वाली अचानक कमी के कारण अधिक पाये जाते हैं। यह स्थिति बैंकों को बचाने के लिए कोष और मंदी के कारण बेरोजगार हुए लोगों की सहायता के लिए आवश्यक खर्चों के कारण और भी गंभीर हो जाती है।

एक दूसरी व्याख्या है कि समस्या यूरोपीय संघ द्वारा समान मुद्रा के रूप में यूरो की रचना ताकि व्यक्तिगत देश अपनी मुद्राओं को समायोजित नहीं कर सकते, में निहित है। परन्तु यह 'समाधान' प्रतियोगी अवमूल्यन का सुझाव देता है, एक ऐसा संरक्षणवाद जो 1930 के दशक में बदनाम हो गया था (यू. के., जो यूरो से बाहर और उसका विरोधी है, ने काम में लिया था)।

एक तीसरी व्याख्या यह है कि वित्तीय संकट पूंजीवाद का अपरिहार्य उत्पाद है, जैसे ही संचय करने का वर्तमान शासन समाप्त होगा; या तो बर्बरवाद या समाजवाद का (Harvey) या फिर शायद अगले आधिपत्य (hegemon) में संक्रमण (Arrighi द्ध का भविष्य होगा। परन्तु यह व्याख्या काफी व्यापक है और राजनीतिक और नागरिक समाज की बारीकियों की विशिष्टता को कम आँकती है।

>>

चौथी व्याख्या–वह जिसे यहाँ विकसित किया जा रहा है–नव उदारवाद को पूंजीवाद के अनिवार्य अगले चरण के रूप में नहीं बल्कि एक ऐसी परियोजना के रूप में देखती है जो वित्तीय पूंजी के विकास के साथ जुड़ी है और जिसके साथ राजनीतिक ताकतों की विस्तृत श्रंखला जुड़ती है। इस दृष्टिकोण के अन्तर्गत इन ताकतों की प्रकृति एवं इनकी संभावनाओं को लेकर बहुत बहस छिड़ी हुई है। सरकारों के गिरने के साथ ही पुराने राजनैतिक दल नये हालातों से निपटने के लिए संघर्ष करते हैं। नई परियोजनाएँ, Occupy to Uncut तक, राज्य के बाहर विकसित होती है; राज्य से संघर्ष करने के लिए नये राजनैतिक दल और गठबंधनों का गठन होता है। इस व्याख्या की विशिष्ट बात संघर्ष के घटनास्थलों, राजनैतिक ताकतों और उनके उभरते एजेण्डा का लैंगीकीकरण है।

> मितव्यत्ता एक नारीवादी मुद्दा है

हाल ही के दशकों में कई यूरोपीय (एवं अन्य) देशों में कल्याणकारी राज्यों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, देखरेख एवं रोजगार के नियन्त्रण और देखरेख–कार्य में हस्तक्षेप के प्रावधानों में लैंगिक पहलुओं में वृद्धि हुई है। ये अक्सर नारीवादी और कामगारों के सामाजिक लोकतांत्रिक एवं समाजवादी एजेण्डे के साथ जटिल तरह से जुड़ी हुई परियोजनाओं का परिणाम हैं। इन लैंगिक परियोजनाओं का सरकारी कार्यक्रमों एवं सामाजिक संरचनाओं में अवसादन, उभरते नवउदारवाद के निजीकरण एवं विनियमीकरण की परियोजनाओं के साथ साथ हुआ। लिंग और वर्ग गतिशीलता कई बार भिन्न हुए हैं। जैसे कामकाजी महिलाएँ धीरे धीरे नागरिक समाज और राजनैतिक संस्थाओं से अधिक जुड़ी हैं, वहीं कई ट्रेड यूनियन जैसी सामाजिक लोकतांत्रिक संस्थाएँ पीछे धकेली गईं। वित्तीय संकट के दौरान नवउदार परियोजना, इन बढ़ती हुई सामाजिक लोकतांत्रिक घटनाक्रमों पर तीखे लैंगिक प्रहार के रूप में उभरी हैं।

कर–निर्धारण एक नारीवादी मुद्दा है। राष्ट्रीय बजट में होने वाले परिवर्तनों पर जेण्डर बजटिंग की तकनीक को लागू करने से पता चला कि घाटे को कम करने के प्रयास जनसंख्या के सभी क्षेत्रों द्वारा बराबरी में वहन नहीं किये गये अपितु महिलाओं द्वारा गैर अनुपात में वहन किये गये। यू. के. में हाउस ऑफ कामन्स की लाइब्रेरी द्वारा रिपोर्ट किया गया कि 2010 के बजट में पाउण्ड 8.1 bn के शुद्ध व्यक्तिगत कर वृद्धि/लाभ कटौती में से पाउण्ड 5.8 bn (72%) महिलाओं द्वारा और पाउण्ड 2.2 bn (28%) पुरूषों द्वारा चुकाया गया। कर (जो कि पुरूषों द्वारा गेर–अनुपातिक रूप में चुकाए जाते हैं) बहुत कम बढ़ाये गये जबकि लाभ और लोक सेवाएँ (जो महिलाओं द्वारा गैर–आनुपातिक रूप में उपयोग में ली जाती हैं) में गंभीर कटौती की गई। कर–पनाह वाले देशों पर रोक लगाना या वित्तीय लेन देन पर कर लगाना (फ्रांस एवं जर्मन नेताओं द्वारा इ. यू. के लिए नीतियों के रूप में बढ़ावा देना, हालांकि लंदन द्वारा इनका विरोध किया गया) लैंगिक नीतियाँ हैं।

एक और यू. के. का उदाहरण महिलाओं के विरूद्ध हिंसा को रोकने के लिए आश्रय, सलाह और सहायता कार्यकर्त्ताओं जैसी स्थानीय कल्याण सेवाएँ उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय बजट में कटौती से सम्बन्धित है। हिंसा के प्रति लैंगिक सामाजिक लोकतांत्रिक प्रतिक्रिया के रूप में इस क्षेत्र का विकास हुआ था जिसमें अपराधियों के लिये दण्डात्मक प्रतिक्रिया जैसे जेल के बजाय महिला पीड़ितों की मदद करने वाले कल्याणकारी प्रावधानों के विकास को प्राथमिकता दी गई थी। एक छोटे शोध प्रोजेक्ट के अन्तर्गत गैर–सरकारी संगठनों और ट्रेड यूनियनों, जिन्होंने 'सूचना की स्वतन्त्रता' की प्रक्रियाओं में निवेश किया था, के सहयोग से निधि कोष/धन में कटौती की बारीकियों के तथ्यों का खुलासा किया गया। राष्ट्रीय बजट में प्रति वर्ष 1% की कटौती बढ़कर स्थानीय परिषदों द्वारा महिलाओं के विरूद्ध हिंसा को रोकने की सेवाओं में 31 प्रतिशत की कटौती के रूप में परिवर्तित हो गई। आंशिक रूप से ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ये सेवाएँ पारम्परिक सेवाओं की तुलना में कानून द्वारा कम संरक्षित थीं।

> भिन्न प्रतिक्रियाएँ

यू. के. एवं अन्य देशों में अर्थव्यवस्था और समाज के पुनर्गठन ने कई तरह की प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न किया है जो देशों के मध्य महत्वपूर्ण रूप से अलग हैं और जिन्होंने भिन्न प्रभावों को उत्पन्न किया है। इन भिन्नताओं के बारे में सोचने का एक तरीका नागरिक समाज द्वारा प्रस्तुत लामबंदी को राज्य की ओर उन्मुख लामबंदी से तुलना करना है। नागरिक समाज लामबंदियों में Occupy, जिसकी कई यूरोपीय एवं उत्तर अमरीकी शहरों में उपस्थिति है, शामिल है। लेकिन ऐसे कई अन्य भी हैं, उदाहरणार्थ, यू. के. में Uncut द्वारा निगमों द्वारा कर चोरी और आनाकानी के प्रति लामबंदी संयोजित की गई। कई यूरोपीय देशों में जिसमें फ्रांस (वाम दल) जर्मनी (Die Linke) और आइसलैण्ड सम्मिलित हैं, सरकारों के गिरने से नवीन राजनैतिक दलों और नवीन गठबंधनों का गठन हुआ। इन वाम लामबंदियों में आम तौर पर सशक्त नारीवादी घटक भी सम्मिलित हैं। कम से कम यूरोपीय संदर्भ में तो इन घटनाओं को राज्य के अन्दर और बाहर की घटनाओं के रूप में ध्रुवीकृत करना शायद गलती होगी क्योंकि राजनैतिक विकास के ये स्वरूप एक दूसरे के साथ संलग्न है। जिन देशों में, जैसे आइसलैण्ड, नारीवादी और वाम ताकतों की अभिव्यक्ति सशक्त हैं वहाँ वित्तीय संकट का कुछ ही लोगों पर नकारात्मक प्रभाव की सघनता में कमी है और गहन लोकतांत्रीकरण की दिशा की तरफ कदम है।

वित्तीय संकट अभी खत्म नहीं हुआ है। पुनर्गठन के प्रयास भिन्न परिणामों को उत्पन्न कर रहे हैं जो विभिन्न राजनैतिक लामबंदियों की वजह से कम से कम नहीं है। ये सिर्फ पूंजीवाद से ही नहीं अपितु लैंगिक शासन से भी सम्बन्धित हैं। परिणामों के उपर अभी भी लड़ाई जारी है। ■

> सक्रिय यूक्रेनी नारीवाद

टमारा मारत्सेनयुक, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ कीव्–मोहय्ला अकादमी, यूक्रेन

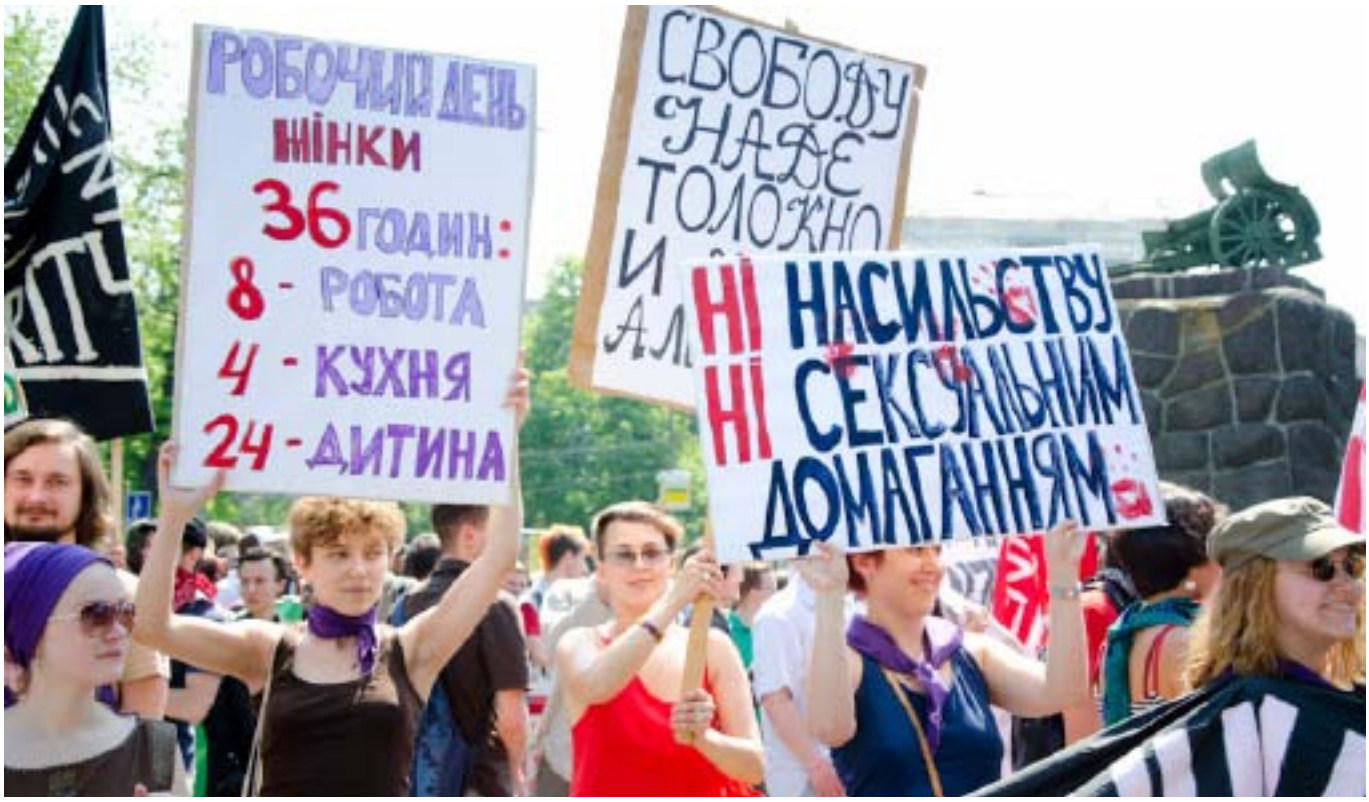

यूक्रेन की महिलाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) न सिर्फ फूल एवं अतिरिक्त आदर–सत्कार लाता है बल्कि यह उन्हें उन अधिकारों का स्मरण कराता है जिनके लिए वे एक सदी से भी अधिक समय से लड़ रही हैं। गत वर्ष एक युवा नारीवादी पहल ''फेमिनिस्ट ऑफेन्सिव'' ने एक नारीवादी कला कार्यशाला, एक नारीवादी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं एक नारीवादी मार्च का आयोजन कर 8 मार्च को मनाने के नये तरीकों की स्थापना की।

''फेमिनिस्ट ऑफेन्सिव'' (http://ofenzyva.wordpress.com) शक्ति के पितृसत्तात्मक स्वरूपों के भिन्न रूपों पर काबू पाने (यौनवाद, होमोफोबिया, ट्रांसफोबिया, एजिस्म, नस्लवाद और दुराग्रह) और महिलाओं के आर्थिक और प्रजनन अधिकारों के लिए खड़े होने वाली एक स्वतन्त्र सार्वजनिक पहल है। यह भेदभाव पूर्ण सामाजिक और विधिक व्यवहारों को बदलने, विवेचनात्मक लैंगिक अध्ययन एवं स्वतन्त्र राजनैतिक सक्रियतावाद के लिए स्थान बनाने और मुक्त नारीवादी ज्ञान और अ–लैंगिक/

औफेन्ज्यावा (Ofenzyva) नारीवादी अभियान ("Feminist Offensive") के सक्रियतावादी कार्यकर्ता कीव में 1 मई 2012 के प्रदर्शनों में भाग लेते हुए। तख्तियों पर लिखा है: ''महिला का कार्यदिवस : 36 घण्टे : 8 – श्रम भुगतान, 4 –रसोईघर, 24 –बच्चों की देखभाल'' (''हिंसा को ना, लैंगिक उत्पीडन को ना'' (''नाद्या टोलोक्नो को मुक्त करो'') जो कि रुसी नारीवादी पुंकरोक (punkrock) संगठन की पूसी रायट (Pussy Riot) की गिरफ्तार सक्रिय कार्यकर्ता है। फोटो औफेन्ज्यावा (Ofenzyva) द्वारा।

गैर–लैंगिक भाषा को विकसित करने व उसे साझा करना चाहती है।

'फेमिनिस्ट ऑफेन्सिव' द्वारा ''फेमिनिज्म असेम्बलेज पाइन्ट'', जिसका अर्थ एकजुट हो कर सभा का स्थान है, पर आयोजित तीन दिवसीय (मार्च 5–7, 2012) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने यूक्रेन, रूस, पौलेण्ड, सर्बिया, फिनलैण्ड, फ्राँस, और यू. एस. ए. से आये विद्वानों और सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को एक जगह एकत्रित किया। ''फेमिनिस्ट पोलिटिकल परफोर्मेन्स'' के पेनल में प्रतिभागियों ने महिला अधिकारों के उल्लंघन के विरूद्ध उनके जमीनी कदमों को साझाा किया। नारीवादी सक्रिय समूह ''ला बार्बे'' (अंग्रेजी में दाढ़ी) ने दाढ़ी लगाकर बोर्डरूम, सम्मेलनों या कला प्रदर्शनियों में घुस कर पुरूषों के वर्चस्व वाले निर्णय–निकायों में महिलाओं की अनुपस्थिति को उजागर किया। "ACT Women" (सर्बिया) विभिन्न प्रकार की लिंग आधारित हिंसा घरेलू हिंसा, फेमीसाइड, बलात्कार, थकावट इत्यादि की तरफ ध्यान आकर्षित करने के लिये नुक्कड़ प्रस्तुतियाँ करते हैं। रूसी नारीवादी पंक बैण्ड ''पूसी रायट'' सम्मेलन में भाग नहीं ले पाया क्योंकि उनके सदस्यों को मास्को स्थित क्राइस्ट द सेवियर के कैथेडरल की वेदी पर प्रदर्शन करने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया था। सम्मेलन आयोजकों ने प्रसिद्ध/चर्चित यूक्रेन का महिला समूह "FEMEN" (जो कि निर्वस्त्र प्रदर्शन कर विरोध करते हैं) को उनके इस क्षेत्र के जमीनी अनुभवों पर चर्चा करने हेतु आमंत्रित करने की योजना बनाई थी। दुर्भाग्य से, "FEMEN" ने निर्णय लिया कि यूक्रेन में महिलाओं के अधिकारों के लड़ने के बजाय निर्वस्त्र प्रदर्शन के साथ विदेश (तुर्की) जाना अधिक महत्वपूर्ण था।

सम्मेलन के दौरान हमनें यूक्रेन, पौलेण्ड और रूस में महिला अधिकारों पर होने वाले धार्मिक और अतिवादी दक्षिण पंथी हमलों पर चर्चा की। अतः पौलिश मानवशास्त्री अगाटा चलस्टोवस्का ने गर्भपात पर हो रही बहस और किस प्रकार से इसे पौलेण्ड और पश्चिमी विश्व (विशेषतः यूरोपीय संघ) के बीच के सम्बन्धों पर बातचीत करने हेतु दलीय राजनीति में चालाकी से काम में लिया गया। इसे इस बात से बिल्कुल सरोकार नहीं था कि महिलाओं के स्वास्थ्य और प्रजनन अधिकारों पर राजनैतिक मौसम का क्या वास्तविक प्रभाव होता है। लेस्या पगुलिच और गलिना यारमेनोवा ने कट्टरपंथी धार्मिक समूहों के भाषणों का विश्लेषण किया जो कि पिछले पाँच वर्षों में, यूक्रेन में गर्भपात, इन–विट्रो फर्टिलाइजेशन और समलैंगिकता के विरूद्ध अभियानों में आश्चर्यजनक रूप से सक्रिय हो गये हैं।

8 मार्च, 2012 को होने वाले नारीवादी प्रदर्शन के लिए महिलाओं के अधिकारों पर प्रहार करने में चर्च और राज्य के बीच सहयोग विषय रखा गया था। 200 प्रतिभागियों ने विभिन्न नारों जैसे ''द चर्च एण्ड द स्टेट, इट्स टाइम टू लिव अपार्ट!'', ''निसंतानता कर–गरीबी पर एक कर'' (हाल ही में यूक्रेन की संसद में 30 वर्ष से अधिक उम्र के निसंतान व्यक्तियों पर कर लगाने के विचार से बिल प्रस्तावित हुआ था) के नीचे मार्च किया। पिछले वर्ष के नारे : ''रसोई कम–किताबें अधिक!'', ''माता–पिता के लिए आधारभूत ढाँचा'', ''परिवार–प्यार हेतु एक स्थान'' इत्यादि थे। यूक्रेन की नारीवादियों ने अपने उपरोक्त वर्णित ''पूसी रायट'' के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं, जो अपने पादरी–विरोधी बयानों के कारण हवालात में थे को रिहा करने की माँग भी रखी।

नारीवादी मार्च ने महिलाओं के प्रजनन अधिकारों पर हमला, जैसा 12 मार्च 2012 को वरखोवना राडा (यूक्रेन की संसद) में हुआ जब डिप्टी अन्द्रिय श्किल ने कृत्रिम गर्भापात के निषेध हेतु कानून बनाने के लिए बिल प्रस्तावित किया था, का पूर्वानुमान लगाया था। वर्तमान कानून में, यदि गर्भ 12 हफ्तों से अधिक नहीं है, वो महिला गर्भपात करा सकती है। 2012 के शारदीय संसदीय चुनावों के नजदीक आने के साथ ही राजनीतिज्ञ जनसांख्यकीय रूझान और लैंगिक नैतिकता जैसे गर्म मुद्दों का शोषण करने का प्रयास करते हैं।

महिलाओं के प्रजनन अधिकारों पर राजनैतिक और धार्मिक कर्ताओं द्वारा हमलें के प्रयासों के फलस्वरूप महिलाओं के गैर–सरकारी संगठनों ने यूक्रेन के संसद के मुखिया, यूक्रेन के राष्ट्रपति और अन्य राजनीतिज्ञों को गर्भपात के अपराधीकरण के प्रभावों पर विचार करने के लिए एक संयुक्त पत्र लिखा। 27 मार्च 2012 को महिला अधिकारों के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने ''यूक्रेन में फेमिसाइड : गर्भपात के अपराधीकरण के क्या खतरें हैं?'' पर एक प्रेस–सम्मेलन का आयोजन किया। उन्होंने राजनेताओं को महिलाओं के प्रजनन अधिकारों का उल्लंघन कर उनके स्वास्थ्य को खतरें में डालने वाले भेदभाव पूर्ण बिल के विरोध करने के लिए उकसाया।

गत दो वर्षों में नारीवाद, दोनों सक्रियतावाद और बौद्धिक चर्चाओं में, यूक्रेन के सार्वजनिक क्षेत्र में उभरा है। यह एक क्षण भी पहले नहीं हुआ, जैसे जमीनी पहल महिलाओं के अधिकारों पर बढ़ते हुए हमलों के प्रतिभार के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। ■

> लेटिन अमेरिका में असुरक्षा का बढ़ता स्तर

गेब्रियल केसलर, ला प्लेटा राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, अर्जेन्टीना

2009 में ब्यूनस आयर्स में अपराध के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन के दौरान एक प्रदर्शनकारी अर्जेन्टीना के झण्डे के रंगों की तख्ती को पकडे हुए जिस पर लिखा है ''असुरक्षा बन्द करो''।

अपराध के प्रति चिंता पूरे लेटिन अमेरिका में फैल चुकी है। यह इस क्षेत्र के लिए आश्चर्यजनक बात नहीं है, यह जानते हुए कि जिस क्षेत्र में दुनिया की केवल 14 प्रतिशत आबादी रहती है, वह आग्नेय शस्त्रों से होने वाली नरहत्या के 40 प्रतिशत के लिए उत्तरदायी है। अपेक्षाकृत निम्न अपराध दर वाले देश जैसे अर्जेन्टीना, कोस्टारिका, चिली और उरूग्वे में भी अपराध का डर काफी अधिक है। बहु उपागम विधि का प्रयोग कर मैंने अर्जेन्टीना में ''असुरक्षा की भावना'' का अध्ययन किया और इस क्षेत्र के अन्य देशों के साथ इसकी तुलना की।[1] अपराध का फैलता हुआ डर लोगों की सामाजिक कल्पनाओं और व्यवहारों में विशिष्ट परिणाम उत्पन करता है। यह व्यापक सहमति कि यह सार्वजनिक समस्या, जो विगत से गुणात्मक रूप से भिन्न है, कारणों, निजी खतरों एवं आवश्यक समाधानों से सम्बन्धित प्रश्नों की एक श्रंखला उत्पन्न करती है। उनके उत्तर असुरक्षा के समाजशास्त्रीय लेखे–जोखे को दर्शाते हैं। यथाार्थ का यह उपागम हमें बताता है कि कौन से मनोभाव महसूस करना तर्कसंगत है और यह अपने आप को क्रिया और प्रतिबद्ध एहतियात के क्षेत्र में प्रक्षेपित करता है, जिसे हम असुरक्षा प्रबंधन कहते हैं। असहजता का विस्तार भी पूर्व समय, जब चिन्ताएँ अधिक सीमित थीं, के शोध निष्कर्षों का खण्डन करता है। एक

>>

तरफ यह डर और सत्तावाद के बीच की कड़ी को संशोधित करता है, वहीं दूसरी तरफ असुरक्षा का विरोधाभास–अर्थात् यह पहले कि क्यों वे समूह जो उपरी तौर से सबसे कम पीड़ित हैं सबसे अधिक डरते हैं–भी परिवर्तित होता है।

1960 के दशक में अमेरिका में हुए प्रारंभिक अध्ययनों से अब अपराध के डर ने अपने आप को वास्तविक अपराध से सापेक्षिक रूप से स्वायत्त दर्शाया है। यह उत्पीड़न के साथ बढ़ता है, परन्तु एक बार सामाजिक समस्या के रूप में स्थापित होने के बाद, अपराध की दर कम हो जाने पर भी यह कम नहीं होता है। अपराध के डर की सामान्य परिभाषा है अपराध के सम्मुख उत्पन्न डर या उत्कंठा या फिर वे चिन्ह जिन्हें लोग अपराध से सम्बन्धित करते हैं। हम ''सुरक्षा की भावना'' की अवधारणा को इस आधार पर पसंद करते हैं कि यद्यपि डर का सन्दर्भ इसमें केन्द्रीय भूमिका निभाता है, यह अवधारणा अन्य प्रासंगिक मनोभावों जैसे गुस्सा, रोष या शक्तिहीनता और राजनैतिक चिंताओं, उनके कारणों के किस्से और वे क्रियाएँ जो असुरक्षा प्रबंधन को निर्मित करती हैं को सम्मिलित करता है।

अब यह देखें कि अर्जेन्टीनी साक्षात्कार दाताओं के अनुसार असुरक्षा क्या है? असुरक्षा और कानून तोडना आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष सामंजस्य में नहीं है। असुरक्षा की विशिष्टता डर की यादृच्छिकता/आकस्मिकता (randomness) है। असुरक्षा एक धमकी के रूप में उभरती है–सम्पत्ति और विशेष रूप में मानवों के प्रति–जो किसी पर भी झप्पटा मार सकती है। उसका एक पक्ष डर का स्थानांतरण है : सुरक्षित और असुरक्षित क्षेत्रों के बीच स्पष्ट परिभाषा का अन्त। अन्य डर के आंकड़ों का सापेक्षिक रूप से शिनाख्त न होना : धमकी की अनुभूति अभी सिर्फ सर्वाधिक उत्पीड़ित लोग, जैसे सीमांतीय समूहों के युवा, तक ही सीमित नहीं है अपितु यह किसी भी व्यक्ति के प्रति अविश्वास का विस्तार है। यह छवियों एवं खतरनाक जगहों की बहुलता एवं आकस्मिक और सर्वव्यापी धमकी की भावना को सुदृढ़ करती है।

विषय पर होने वाले अध्ययनों ने प्रश्नों की श्रंखला और विरोधाभासों के उत्तरों पर अपने आप को केन्द्रित किया है : वे समूह जैसे महिलाएँ और बुजुर्ग, जो सबसे कम उत्पीड़ित हैं, उनमें असुरक्षा का भाव जाहिर तौर पर अधिक क्यों हैं? सामाजिक वर्ग और डर में क्या सम्बन्ध है? मैंने इन विरोधाभासों को अर्जेन्टीना के मामले में त्रिकोणीय पद्धति को काम में लेते हुए गुणात्मक व संख्यात्मक पद्धति से देखा। वर्ग के संदर्भ में, संख्यात्मक अन्तर अधिक चिन्हित नहीं थे परन्तु गुणात्मक तथ्यों में दूरी और निकटता महत्वपूर्ण अंतर वाले अक्ष साबित हुए। लोकप्रिय वर्ग चेतावनी के प्रति एक शारीरिक और सामाजिक निकटता महसूस करते हैं जबकि मध्यम एवं उच्च वर्ग अपराध से सामाजिक और शारीरिक दूरी का अनुभव करते हैं। निकटता एक ऐसी राजनीतिक व्याख्या, जो सामान्य तौर पर ''नीचे से उपर की ओर'' निर्मित होती है, को प्रभावित करती है। लोकप्रिय इलाकों में मूर्त मामलों को लेकर कई स्थानीय बहस होती हैं और चर्चा स्वयं समुदाय के चारों तरफ घूमती है। मध्यम और उच्च वर्गीय क्षेत्रों में दूरी ''उपर से नीचे की तरफ'' के दृष्टिकोण का निर्माण करती है, एक व्याख्या जो बिना व्यक्तिगत संदर्भ बिन्दु के साथ सामाजिक और राजनैतिक प्रक्रियाओं पर आधारित होती है। तथापि, निकटता अपने आप में दण्डात्मक पदों से न अधिक समानुभूति और न ही दूरी सूचित करती हैं निकटता नैतिक निंदा की तरफ भी ले जा सकती है क्योंकि सभी के लिए समान मुश्किल परिस्थितियों के बावजूद ''मेरे बच्चे चोरी नहीं करते'' या दूसरी तरफ परिवार के सदस्यों को इस आधार पर क्षमा किया जा सकता है कि ''दिल से वे बुरे बच्चे नहीं हैं''। दूरी आम तौर पर संरचनात्मक कारणों की गुहार और साथ ही एक चरम प्रतिक्रियावादी स्थिति जो इसे ''गुरिल्ला युद्ध के समकालीन स्वरूप'' समझती है में जुड़ी होती है। अतः अधिक या कम दण्ड किसी एक वर्ग में विशिष्ट नहीं है–जो कि इस क्षेत्र में बहस का एक विषय है।

केन्द्रीय विरोधाभास लिंग के चारों तरफ घूमता है। आँकड़े लगातार महिलाओं में अधिक डर दिखाते हैं और संबंधित बहसों ने भी इस अन्तर पर रोशनी डाली है। तथापि, जब असुरक्षा फैलती है, ''भावनाओं और अभिव्यक्ति के नियमों'' के इर्द गिर्द लैंगिक भेद कम हो जाते हैं। पुरूषों के लिए, डर को महसूस और अभिव्यक्त करना अधिक तर्कसंगत हो जाता है। सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कारों के मध्य त्रिकोण में देखा गया कि वे उत्तरदाता जिन्होंने सर्वेक्षण के दौरान कहा था कि वे डरते नहीं है, साक्षात्कार के दौरान उन्होंने कहा कि उन्हें स्थिति की परिभाषा को देखते हुए तार्किक रूप से डर था।

जब डर अल्पसंख्यकों का एक तत्व था, तब वह सत्ताधारी अभिवृत्तियों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध में अवलोकित होता था। इस क्षेत्र में वर्तमान बहस इस बात पर है कि क्या असुरक्षा की भावना में वृद्धि अधिक दण्डात्मकता को बढ़ा रही है। सामान्यतः असुरक्षा पूर्व–वर्ती राजनैतिक विचारधारा के अनुसार भिन्न तरह तक परिवर्तित होती है, हालाँकि असुरक्षा लोकतांत्रिक अभिशंसा का क्षरण भी कर सकती है। असुरक्षा की कहानियों में हम जिसे ''दण्डात्मक भूस्खलन'' कहते है, देख सकते हैं–अधिक सौम्य स्तर से अधिक कड़े उपायों की तरफ बदलाव चाहे वह पूर्ण रूप से सख्त न हो। किसी और से अधिक, इसमें तथाकथित सामाजिक संकट की व्याख्या का क्षरण होता है। गत दशक में, अपराध नवउदारवादी सुधारों का ऋणात्मक परिणाम है, इस बात पर मतैक्य था। आज, कई वर्षों की वृद्धि और कम होती गरीबी और असमानता के बाद भी अपराध बिल्कुल भी कम नहीं हुआ है। अतः लेटिन शैक्षिक समूह के लिए यह अधिक दण्डात्मक संभाषण के लिए अधिक परिष्कृत व्याख्या के निर्माण की चुनौती प्रस्तुत करता है। अन्य संदर्भों की भाँति, ऐसे दण्डात्मक संभाषण सामाजिक संरचना से पात्रों पर दोष मढ़ने की व्याख्या की ओर इशारा करते हैं।

यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो असुरक्षा की विस्तृत अनुभूति हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। जिस प्रकार के प्रत्युत्तर शैक्षिक समाज प्राप्त कर सकते हैं और जिस स्वरूप में हम उन प्रत्युत्तरों को बाकी समाज को सूचित कर सकते हैं, वह हमारे लोकतंत्र की गुणवत्ता पर बहुत अधिक निर्भर होगा। ■

[1] Kessler, G. (2009) *El sentimiento de inseguridad – Sociología del temor al delito* [*The Feeling of Insecurity: Sociology of the Fear of Crime*]. Buenos Aires: Siglo XXI Editores.

> कोलम्बिया में अश्वेत मध्य वर्ग : एक सामाजिक विरोधाभास?

मारा विवरोज विगोया, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ कोलम्बिया, बोगोटा, कोलम्बिया

अनेक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि अफ्रीकी मूल की कोलम्बिया की जनसंख्या की आय का स्तर निम्नतम है। इसके साथ ही जीवन की गुणवत्ता का निम्न स्तर बाल श्रम की उच्चतम दर, सामाजिक सुरक्षा की सम्बद्धता की निम्नतम स्थिति एवं जनांककीय दृष्टि से सर्वाधिक कमजोरी वे पक्ष हैं जो इस समूह को कोलम्बिया में सर्वाधिक निम्नतम स्तर पर स्थापित करते हैं (Urrea et al., 2004)। इसके अतिरिक्त नागरिकीय समाज में वरिष्ठ पद प्राप्त अश्वेत पुरूष जो कम संख्या में और अश्वेत महिलायें जो और भी कम संख्या में है, संचार माध्यमों में अश्वेत पुरूषों एवं महिलाओं की सकारात्मक छवि का अभाव व सार्वजनिक स्थानों पर उनकी प्रतीकात्मक उपस्थिति इन तथ्यों की परिचायक है कि कोलम्बिया में प्रजातिवाद व्यापक स्तर पर विद्यमान है। इस संदर्भ में क्या यह उपयुक्त है कि ऐसे कुछ अश्वेत लोगों का अध्ययन किया जाय जो प्रजातिवाद अथवा रंगभेद के अनुभवों से नहीं गुजरे हैं।

एक सम्भावित उत्तर यह है कि ऐसे अध्ययन उस संदर्भ में उपयुक्त हो सकते हैं जब कोलम्बिया में अफ्रो–कोलम्बियन के सामाजिक उन्नयन की स्थितियाँ दृष्य हों या इन स्थितियों के उत्पन्न होने में ऐसे अध्ययनों से सहायता मिलती हो। इन प्रक्रियाओं का आंशिक रूप में ही अध्ययन हुआ है और सामान्यतः इन्हें राष्ट्रीय इतिहास के कार्यालयी दस्तावेजों से पृथक कर दिया गया है। इस प्रकार ये अध्ययन वैकल्पिक संभावित प्रतिनिधित्व के रूप में उपस्थित होते हैं जो इस जनसंख्या के पूर्वाग्रही प्रतिनिधित्व के ठीक विपरीत हैं।

यद्यपि हम अपने शोध के माध्यम से अब कुछ ऐसे तथ्यों से परिचित हैं जो हम इस जनसंख्या के विषय में पहले से नहीं जानते थे। हम यह भी नहीं जानते थे कि लैंगिक प्रस्थिति, प्रजाति एवं वर्गीयहित किस प्रकार अश्वेत मध्य वर्ग के विषय को निर्मित करते हैं। यहां पर मैं एक वृहद अध्ययन के कुछ परिणामों को प्रस्तुत कर रही हूं। (Viveros and Gil, 2010)

> उत्तरोत्तरता का प्रबन्धन कौन करता है?

देश के विभिन्न क्षेत्रों में 20वीं शताब्दी के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों एवं खनन क्षेत्रों में आर्थिक पूंजी के संकेन्द्रण एवं व्यापक क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की उपलब्धता में वृद्धि ने अश्वेत मध्य वर्ग को निर्मित किया है। प्रजातीय पूर्वाग्रहों एवं भेदभावों के बावजूद इस अश्वेत मध्य वर्ग ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में एक सीमा तक उपलब्धियाँ भी हासिल की हैं। उर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता की इन प्रक्रियाओं ने कोलम्बिया में अश्वेत जनसंख्या को उन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं क्षेत्रीय 'स्पेसेज' में स्थान दिया है जिनसे वे उभर कर आये हैं। मैं जिस विश्लेषण को यहां प्रस्तुत कर रही हूं वह बोगोटा नगर की जनसंख्या पर आधारित है। इस जनसंख्या का बहुमत प्रशांत क्षेत्र से आता है। यह वह क्षेत्र है जहां अफ्रीकी वंशजों की जनसंख्या इस देश के संदर्भ में सर्वाधिक अनुपात में विद्यमान है।

अश्वेत जनसंख्या की सामाजिक जटिलताओं एवं गतिशीलताओं का विश्लेषण करने हेतु मैंने तीन पीढ़ियों–स्वयं, उनके माता पिता एवं उनके दादा–दादी को केन्द्र में रखा। हमने दो मुख्य समूहों को रेखांकित किया। यह रेखांकन सामाजिक गतिशीलता के प्रकार के परिभाषा पर आधारित है। प्रथम वे लोग जो अपने माता–पिता एवं दादा–दादी की लिए सामाजिक स्थितियों को पुनरोत्पादित करते हैं तथा दूसरे वे लोग जो अपने पूर्वजों के माध्यम से अपना सामाजिक उन्नयन करते हैं। दूसरे समूह में हम गतिशीलता की विभिन्न दरों को पा सकते हैं। कुछ लोग धीरे धीरे उन्नयन की ओर अग्रसर होते हैं जबकि कुछ लोग तीव्र गति से उन्नयन का हिस्सा बनते हैं। हमारे विश्लेषण के परिणाम बताते हैं कि पुरूषों की तुलना में महिलाओं की परिस्थितियाँ अधिक पुनरोत्पादक होती है अर्थात् पुरूषों की तुलना में महिलाओं की उर्ध्वगामी गतिशीलता की दर मन्द होती है। वे महिलाऐं जो उर्ध्वगामी गतिशीलता का भाग है, अधिकांशतः पेशेवरों की पुत्रियाँ हैं या उन लोगों से सम्बद्ध हैं जिनके पास शिक्षा का लगभग उच्च स्तर विद्यमान है। इसके विपरीत पुरूष सामान्यतः उन लोगों से सम्बद्ध हैं अर्थात् वे उन पुरूषों के पुत्र अथवा पौत्रों से सम्बद्ध हैं जिनके पास आंशिक शिक्षा है अथवा वे अशिक्षित हैं। यदि हम यह स्वीकारें कि पुरूषों एवं महिलाओं का बहुमत ऐसा है जो उन दादा दादियों के पौत्र/पौत्री हैं जो कभी विद्यालय नहीं गये तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शिक्षा क्षेत्रों में संक्रमण वह मुख्य बिन्दु है जो

दादा–दादी एवं माता–पिता की पीढ़ियों के मध्य क्रियाशील होता है।

> एफ्रो–कोलम्बियन के सामाजिक उन्नयन में लैंगिक प्रस्थिति का स्थान:

सामाजिक गतिशीलता के अर्थ में वेतन वृद्धि के अतिरिक्त 'वर्ग हेबीटस' को अपनाना सम्मिलित है। 'वर्ग हेबीटस' में यद्यपि सामाजिक एवं सांस्कृतिक पूंजी के भेदीकरण सम्मिलित होते हैं पर इसमें लैंगिकता एवं प्रजातीयता सम्बन्धी विभेद भी आते हैं। मध्य वर्गों की परिभाषा केवल लोकप्रिय (निम्न) वर्ग के विपरीत ही नहीं है अपितु इसमें प्रभुत्वशाली लैंगिक अस्मिताओं के अनेक निर्मायक तत्वों से सम्बन्धी पक्ष भी जुड़े होते हैं। इस अर्थ में अश्वेत पुरूषों एवं महिलाओं के लिए उध वर्गामी गतिशीलता में प्रमुख लैंगिक प्रतिमानों की पालना एवं उन मूल्यों व व्यवहारों के पक्ष भी सम्मिलित हैं जो कोलम्बियाई समाज में पुरूषों व महिलाओं को प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। ये मूल्य, व्यवहार व लैंगिक प्रतिमान वे हैं जो श्वेत लोगों अर्थात् स्पैनिश माता पिता व अमेरिकन इण्डियन माता पिता से सम्बद्ध लोगों (मैस्टिजो) पर क्रियाशील हैं। स्व को विकसित करने वाले ये अनुभव उन लोगों को लगातार प्रभावित करते हैं जो इनके अध ीन रहे हैं। इन मूल्यों एवं व्यवहारों ने अश्वेत पुरूष एवं महिलाओं को अनुशासित, विवेकपूण र्ण एवं मेहनती बनाया है। जो इनके कार्य क्षेत्र एवं इनके परिवारों में निर्वाह की जाने वाली भूमिकाओं में स्पष्ट रूप से दिखता है।

जिन महिलाओं से साक्षात्कार लिये गये वे न केवल अच्छी माताऐं थीं अपितु उदाहरण प्रस्तुत करने वाली पत्नियाँ भी थीं। इन महिलाओं की भाषा, हावभाव एवं सामाजिक व्यवहार न केवल शिष्ट, शालीन एवं व्यवस्थित थे अपितु उच्च सामाजिक वर्गों में महिलाओं के मूल्यों से निर्मित होने वाली छवि उनके निजी जीवन में अभिव्यक्त होती थी। अपनी प्रतिष्ठा को संरक्षित करने के लिए इन महिलाओं ने स्वयं को यौनिकता के उस परिवेश से स्वयं को अलग किया जो प्रारम्भिक आयु अथवा विवाह के समय प्रारम्भ हो जाता है। उन्होंने स्वयं को उस अनुमान से प्रतिक्रिया के माध्यम से पृथक कर लिया कि उनमें संदेह उत्पन्न करने वाली नैतिकता है या वे यौनिक दृष्टि से उन्मुक्त हैं।

पुरूषों ने उन प्रभावी प्रतिमानों को अपनाया है, जिनके कारण वे उत्तरदायी श्रमिक एवं अच्छी आर्थिक सेवाऐं प्रदान करने वाले व्यक्ति बनकर उभरे हैं। उनकी अपनी रूचि एवं व्यवहारों की अभिव्यक्ति न केवल शिष्ट है अपितु वे अपने व्यवहारों को प्रश्न एवं संदेह के परे ले गये हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में उनका व्यवहार सभ्य पुरूषों की कार्यप्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है। अशोभनीयता एवम् अनाचार से उन्होंने स्वयं को अलग कर लिया है। इस अशोभनीयता एवं अनाचार को निम्न वर्ग के अश्वेत लोगों की जीवन प्रणाली का एक मुख्य भाग माना जाता था।

> व्यक्तिगत उन्नयन, सामूहिक उन्नयन नहीं

कोलम्बिया में अश्वेत लोगों की उर्ध्वगामी गतिशीलता एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है। इसके विपरीत अमेरिका में, उदाहरण के लिये अश्वेत जनसंख्या समूह गतिशीलता का भाग रही है (Frazier, 1975)। कोलम्बिया में लघु मध्य वर्ग के सदस्य समुह की सहायता पर आश्रित नहीं हैं अर्थात् समुह की सहायता उनकी सफलता तथा समुह को होने वाले लाभों को सुनिश्चित नहीं करती। वे अपने एकाकी परिवारों एवं नातेदारों से भी परे हैं। उर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता के ये मार्ग हमारे विश्लेषण में स्थितियों से प्रमाणित होते हैं : अश्वेत लोग जिन्हें कुछ सफलता मिली है अपने एवं अपने परिवार के इतिहास से विलग हुए हैं और इस विलगता ने मध्य वर्ग के सामाजिक क्षेत्रों में उन्हें स्थापित किया है। हालाँकि वे समुच्चय नृवंशीय एवं प्रजातीय समुह के लिए उन्नयन का महत्वपूर्ण भाग नहीं बने हैं और न ही वे अपने समूह की नकारात्मक छवि को परिवर्तित कर पाये हैं। इसके साथ ही हम यह भी कह सकते हैं कि अश्वेत लोगों के मध्य वर्ग का यह समूह चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो पर यह व्यक्त करता है कि प्रजाति सभी समाजों में समान भूमिका का निर्वाह नहीं करती, परन्तु यह असंभव है कि वर्ग, लैंगिक प्रस्थिति एवं यौनिकता को प्रजाति से पृथक नहीं किया जा सकता। प्रजाति इन पक्षों को न केवल उत्पन्न करती है अपितु इन्हें बनाए भी रखती है।

सामाजिक गतिशीलता का पक्ष अपने आप में विशिष्ट दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एर्फो–कोलम्बियन जनसंख्या के द्वारा अनुभव की गयी सामाजिक सीमान्तता एवं प्रजातीय

"अब हम जानते हैं कि किस प्रकार लिंगभेद, प्रजाति एवं वर्ग एक दूसरे को विभाजित करते हैं"

भेदभाव के समाधान के रास्तों को व्यक्त करने का आधार है। कोलम्बिया में अश्वेत जनसंख्या की उर्ध्वगामी गतिशीलता के रास्ते विभिन्न नियमों की सामान्य स्थिति से इतर है अथवा अपवाद है। क्योंकि कोई भी सामाजिक स्थिति उनके उन्नयन में सहायक नहीं है। उध र्वगामी गतिशीलता की प्रक्रिया जो कि अश्वेत जनसंख्या में उभरती है का विश्लेषण इस तथ्य की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करता है कि प्रजातीय पूर्वाग्रह न केवल अस्तित्व में हैं अपितु लगातार बने हुए हैं। इस अनुभव की जटिलता एवं किसी भी उपागम की सीमा हमें इस अनुमान की ओर ले जाती है कि सभी विषम स्थितियों के बावजूद अश्वेत मध्य वर्ग कोलम्बिया में अश्वेत लोगों की सामाजिक सीमान्तता की समस्या पर प्रतिक्रिया हेतु एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने में सक्षम होगा। ■

References

Frazier, F. (1975) *Black Bourgeoisie: The Rise of a New Middle Class in the United States*. London: Collier Macmillan Publishers.

Urrea, F., Ramirez, H. F., and Viáfara, C. (2004) "Socio-Demographic Profiles of the Afro-Colombian Population in Regional Urban Contexts of the Country in the Early Twentieth Century." In M. Pardo *et al.* (Eds.), *Pan-Afro Social Studies in the Pacific*. Bogotá: ICANH, National University of Colombia: 213-269.

Viveros, M. and Gil Hernández, F. (2010) "Gender and Generation in Black People's Experiences of Social Advancement in Bogotá." *Maguaré* 24: 99-130.

> रूस में समाजशास्त्र की वास्तविक स्थिति पर:

वाख्शात्यन की विवादात्मक कुशलता का विरोध

लेखक : एन. वी. रोमानोवस्की एवं झ. ट. टोशचेन्को, रशियन जर्नल सोशियोलोजिकल स्टडीज् के सम्पादक

प्रतिष्ठित रुसी समाजशास्त्री व्लाडिमिर यादोव (बांये) तथा निकिता पोक्रोवस्की (दांये) 6 जून 2008 को मास्को में सोसाइटी आफ प्रोफेशनल सोशियोलोजिस्ट्स की मीटिंग के अवसर पर।

ग्लोबल डायलाग 2.3 में विक्टर वाख्शात्यन के लेखन ने हमें प्रेरित किया कि रूस में समाजशास्त्र की स्थिति पर टिप्पणी की जाय। वाख्शात्यन का समकालीन रूसी समाजशास्त्र का मूल्यांकन जिस तर्क पर आधारित है वह लेखक के स्वयं के पद्धतिशास्त्र के मुद्दों से जड़ी सीमित दृष्टि पर निर्मित हुआ है। वाख्शात्य ने सामान्य रूप में सिद्धान्ततः अपने विरोधियों की इसलिए आलोचना की है क्योंकि वह आनुभाविक अनुसंधान में स्वयं की भागीदारी नहीं करते और व्यावहारिक रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों में समाजशास्त्रियों के साथ उनका कोई सम्पर्क नहीं है। परिणामस्वरूप सम्बद्ध समस्याओं के विषय में उनकी समझ भी नहीं हैं। वाख्शात्यन के स्वयं के मतों को नकारे बिना, रूसी समाजशास्त्र के विषय में उनके मूल्यांकन से हम पूर्ण रूपेण असहमत हैं और इस विषय पर हम अपनी समझ को यहां प्रस्तुत करना चाहेंगे।

'सोशियोलोजिकल स्टडीज' (रूसी भाषा में इसे Sotisiologicheskiye Issledovania या SOCIS कहा जाता है एवं वाख्शात्यन के अनुसार 2008 में आल–रशियन सोशियोलोजी कांग्रेस में 66 प्रतिशत सहभागी इस पत्रिका को पढ़ते हैं) जो कि एक अकादमिक पत्रिका है के सम्पादकों के रूप में हमारा मत है कि मास्को, सैण्टपीटर्सबर्ग एवं देश के अन्य नगरों के समाजशास्त्री अनुसंधान में बड़ी गहराई तक लिप्त हैं। हमारे हजारों साथी अनुसंधानों के माध्यम से परिणामों को प्राप्त भी कर रहे हैं, हाँ यह सच है कि यह उपलब्धि बिना कठिनाइयों के नहीं है। साथ ही इनमें असफलता भी विद्यमान है।

> रूसी समाजशास्त्र में वास्तव में क्या घटित हो रहा है?

सर्वप्रथम कोई भी यह जान सकता है कि देश में हुए अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों के विश्लेषण एवं उनके कारकों की खोज हेतु विविध एवं नवाचारी उपागमों का प्रयोग किया जा रहा है। अकादमिक समुदाय वी. ए. यादोव के उस आनुभाविक अध्ययन से परिचित है जिसमें उत्पादन प्रक्रिया से सम्बद्ध श्रमिकों की चेतना एवं व्यवहार में हुए परिवर्तनों की मौलिक विवेचना है। आईएसए कार्यकारिणी के सदस्य प्रोफेसर एन. ई. पोकरोव्सकी ने यूरोपियन रूस के उत्तरी क्षेत्र में ग्रामीण जीवन प्रक्रियाओं का अध्ययन किया है। समाजशास्त्रीय विज्ञान के डाक्टर वी. के. लेवाशोव ने सम्पोषित/दीर्घकालिक विकास के अवधारणात्मक स्वरूप के आधार पर बीस वर्षों की निगरानी को केन्द्रित करते हुए रूसी समाज में परिवर्तन की नवीन प्रवृत्तियों का परीक्षण किया है। अन्त में इस आलेख के एक लेखक टोशचेन्को के अध्ययन का हम उल्लेख करना चाहेंगे। इस अध्ययन का शीर्षक 'अन्तः विरोधी मनुष्य' (पैराडाक्सिकल मैन) है और जिसकी प्रशंसा पी. स्टोम्का, जैड. बाउमेन तथा टी. आई. जस्लावस्काया ने की है। दूसरे, शोध विषयों एवं उनसे सम्बन्धित भौगोलिक क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हैं। हम इस संदर्भ में कुछ उदाहरण देना चाहेंगे। रोस्टोव के समाजशास्त्री यू. जी. वाल्कोव की पुस्तक का मुख्य विषय रूसी समाज में सृजनशीलता के साथ जुड़ा है जिस पर पहले अध्ययन नहीं हुआ। निझनीनाव गोरोड के समाज वैज्ञानिक ए. वी. श्कूरको ने न्यूरो–समाजशास्त्र की सम्भावनाओं को तलाशा है और व्यवस्थित तर्क देते हुए प्राकृतिक एवं समाजविज्ञानों के सम्बन्धों को नवीन आयाम दिये हैं। आकृति–मूलक (आय, शिक्षा, शक्ति) एवं असम्बद्ध प्रतिकात्मक (प्रतिष्ठा), महत्व (प्रस्थिति) स्थितियों के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण का अध्ययन इर्कुटस्क के प्रोफेसर ओ. ए. कर्माडोनोव ने किया है। इन अध्ययनों के माध्यम से समकालीन रूसी समाज में व्यापक अनेक विशिष्ट प्रक्रियाओं की जानकारी हमें प्राप्त होती है।

तीसरे, अनुसंधान प्रयासों ने अनेक प्रसिद्ध अवधारणाओं (जैसे Res Publica) को नवीन संदर्भों के साथ स्थापित किया है। रूसी नगरों में विभिन्न मुद्दों के समाधान जैसे सामाजिक सुविधाओं (सोश्यल इन्फ्रास्ट्रक्चर) के ढाँचे के पक्षों का तार्किक प्रयोग जैसे विषय का अध्ययन ओ. खारखोर्डिन के नेतृत्व में युवा शोधकर्त्ताओं ने किया है (यूरोपियन यूनिवर्सिटी, सैण्ट पीटर्सबर्ग)।

>>

चौथे, उत्तर–सोविचत रूस में कुछ ऐसे अनुसंधान के नवीन क्षेत्र उभरे हैं जो पहले कभी यथार्थ के रूप में नहीं थे जैसे बाजार के द्वारा उत्पन्न हुई सामाजिक समस्याएं। इन समस्याओं का अध्ययन प्रोफेसर वी. वी. राडाएव (हायर स्कूल ऑफ इकनोमिक्स) ने किया है। इनके प्रकाशन न केवल हमारे देश में अपितु विदेशों में भी प्रसिद्ध हैं।

और अन्त में, वास्तव में रूस के प्रत्येक विश्वविद्यालय में हमारे संकाय सदस्य पश्चिमी यूरोप, अमेरिका, भारत, चीन, जापान एवं अन्य एशियायी देशों के संकाय सदस्यों के साथ संयुक्त शोध परियोजनाओं को संचालित कर रहे हैं। इस पक्ष से जुड़े किसी भी उदाहरण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस प्रकार का सम्पर्क दिन प्रतिदिन के प्रयासों का भाग हैं तथा इस प्रकार की शोध परियोजनाओं के माध्यम से प्रत्येक सहभागी ज्ञान की दृष्टि से समृद्ध होता है।

आम तौर पर अंग्रेजी भाषा की दो शोध पत्रिकाओं 'सोशियोलोजिकल रिसर्च' एवं 'सोसायटी एण्ड एज्यूकेशन', जिनका प्रकाशन एम. ई. शार्प के द्वारा किया जाता है, में रशियन जर्नल्स ऑफ सोशियोलोजी में प्रकाशित शोध पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद कर प्रकाशन सिद्ध करता है कि रशियन/रूसी समाजशास्त्र में रूचि की वृद्धि हो रही है और साथ ही उसका महत्व भी बढ़ रहा है। वस्तुतः रूस में अकादमिक एवं स्वायत्तशासी संस्थानों अथवा विश्वविद्यालयों की सहायता से समाजशास्त्र की लगभग तीस पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से अनुसंधानकर्त्ता अपने अध्ययनों से सम्बद्ध विचारों की सहभागिता करते हैं। इनमें से अधिकांशतः अपने आलेखों पर बहस व आलोचना को आमन्त्रित भी करते हैं।

> रूस में समाजशास्त्र की समस्याएं क्या हैं?

यह आश्चर्यजनक ही होगा यदि यहां कोई समस्याऐं न हो परन्तु कभी कभी समाजशास्त्र की ये समस्याऐं उसकी सफलता से उभार लेती हैं। रूस में समाजशास्त्र के विश्वविद्यालयी विभागों की संख्या 300 है एवं लगभग 110 विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्रियों को प्रशिक्षण प्राप्त होता है। ये तर्क निश्चय ही गर्व करने योग्य है। हालांकि पिछले लगभग बीस वर्ष से अधिक से इन संस्थानों में विशेषज्ञों के गहन प्रशिक्षण ने अनेक परिसीमाओं को भी उत्पन्न किया है। अनेक विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण अपेक्षा के अनुरूप नहीं दिया जाता या इसमें उन्नयन की और भी सम्भावनायें हैं क्योंकि शिक्षकों की नियुक्तियाँ विभिन्न विज्ञान विषयों से होती हैं। ये शिक्षक समाजशास्त्र के शिल्प पर अधिकार जमाने की दृष्टि से अभी अनुभवहीन है।

हम यह कह सकते हैं कि समाजशास्त्रीय प्रदत्त सूचना समाज के अविभाज्य अंग हैं। वास्तविकता तो यह है कि रूस में ऐसा कोई समाचार पत्र, पत्रिका, शोध पत्रिका एवं इलैक्ट्रानिक माध्यम नहीं है जो समाज–शास्त्रीय प्रदत्तों को प्रयुक्त नहीं करता। इस उपलब्धि के नकारात्मक पक्ष भी है। विभिन्न निगम एवं अन्य शक्तिशाली समूह अनेक सूचनाओं को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं और मीडिया के मालिक अपने हित में सूचनाओं को प्रतिबन्धित करते हैं। ऐसा लगता है कि जो लोग अपने आपको समाजशास्त्री के रूप में प्रस्तुत करते है ऐसे लोग चुनाव प्रचार में विभिन्न स्तरों पर सक्रिय होते हैं। संघीय स्तर से स्थानीय स्तर तक के चुनावों में यह सक्रियता व्यक्त होती है। 'डिप्टीज' के चुनाव प्रचारों में ये छदम् समाजशास्त्री निर्देशन देने के लिए संविदात्मक आधार पर नियुक्त होकर पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं।

''बाजार'' अभिमुखन की इन स्थितियों के विपरीत प्रत्यावर्तन का उभार होता है (इस स्तर पर वाख्शात्यन का विचार उपयुक्त है) जो समाशास्त्र का समाजशास्त्र के रूप में उपस्थित होता है। यह निश्चित है कि समाजशास्त्र को अपने आधार का परीक्षण करना चाहिए साथ ही विज्ञान का अर्थ, इसका पद्धतिशास्त्र एवं प्रविधि का भी परीक्षण करना चाहिए। परन्तु यदि यह अपने आप में लक्ष्य है तो निश्चित रूप से इसका परिणाम समाजशास्त्र का समाज से पृथक्करण होगा और अन्ततः समाजशास्त्र एक आभासी विज्ञान में बदल जायेगा जिसकी समाज को आवश्यकता नहीं है।

परन्तु यदि हमारे विरोधियों का यह मत है कि रूसी समाजशास्त्र मुख्यतः इन्हीं पक्षों से निर्देशित है तो यह सच नहीं है। पुस्तकों के मापन यह निश्चित करते हैं कि रूसी समाज शास्त्रियों का 80 प्रतिशत से अधिक योगदान सार्थक मुद्दों जैसे आर्थिक, श्रम, नगर, ग्रामीण जीवन, युवा एवं शिक्षा, विचलित व्यवहार, धर्म, सरकार इत्यादि–से सम्बन्धित है।

> समाज की प्रक्रियाओं से सम्बद्ध विचारों को अग्रसर करने में गलत क्या है?

वाख्शात्यन इस दावे से सहमत नहीं है कि समाजशास्त्र में नव्य एवं सोवियत विरोधी भाषाओं का समन्वय है। कुछ लोग उन पुरानी आदतों से प्रतिबद्ध है कि यह स्थिति आदिमता की परिचायक है। अन्य लोगों ने उदारवाद के उन आदर्शों के साथ धोखा किया है जिनसे वे उत्तर–सोवियत के दौर में बीस वर्षों से प्रतिबद्ध रहे हैं। हमारी दृष्टि में ये स्थितियाँ आश्चर्यजनक नहीं है। ''परम्परावादी'' इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि वर्तमान का अध्ययन करने हेतु इस देश को नवीन पद्ध तियों की आवश्यकता है ताकि देश की वास्तविकताओं को समझा जा सके। जबकि उदारवादी चेतना से जुड़े समाजशास्त्री पाते हैं कि उनकी अपेक्षाऐं अभी मूर्त रूप नहीं ले सकी हैं। रूस ने विकास का भिन्न रास्ता अपनाया है एवं आर्थिक तथा सामाजिक जीवन को बदलने के लिए जो माध्यम ग्रहण किये हैं वे न्यायोचित नहीं है। अतः समूह जो दस वर्ष पहले एक दूसरे के विरोधी थे अब समन्वय का रास्ता अपना रहे हैं और अपने निष्कर्षों व विचारों को एक दूसरे के निकट ला रहे हैं।

यह इसलिए नहीं है कि वे समन्वय चाहते थे अपितु इसलिए कि सामाजिकीय (आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक) वास्तविकताओं के विश्लेषण से उभरे समान परिणामों ने उन्हें निकट आने व समन्वय हेतु प्रेरित किया। हालांकि विमतियाँ बनी रहती हैं पर हमारी दृष्टि में समाजशास्त्रीय समुदाय ने धीरे धीरे यह स्वीकार कर लिया है कि विवाद, बहस एवं विचारों की तुलना, जो कि यथार्थ के आनुभाविक विश्लेषण पर आधारित है, आगे बढ़ने का सबसे उपयोगी एवं विश्वसनीय तरीका है विशेषतः तब जब कि समूह हितों के स्थान पर विज्ञान की दृष्टि व पद्धति को महत्व दिया जावे।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हम वाख्शात्यन के तर्कों के तरीकों का आधारभूतीय विरोध करते हैं। वाख्शात्यन अपने एवं व्यक्तियों के विचारों एवं मतों को रूस के समाजशास्त्रीय समुदाय की विशेषता मानकर अपने दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हैं। पर इस विशेष दृष्टि में अर्थात् विचारों में किसी भी नाम को रेखांकित नहीं किया गया है। परिणामस्वरूप लेखक अपरिचित विरोधी से विचार केन्द्रित संघर्ष कर रहा है। दुर्भाग्यजनक यह है कि विचारों का यह वह तरीका है जिसे पूर्व के युग से अधिग्रहित अथवा आन्तरीकृत किया गया है। पर अब इसे अस्वीकृत किया जा चुका है। ■

> मितव्ययिता के युग में ब्रिटिश समाजशास्त्र

जॉन डी ब्रीवर, एबरडीन विश्वविद्यालय, यू. के. एवं अध्यक्ष, ब्रिटिश समाजशास्त्र परिषद, 2010–2012

ब्रिटिश समाजशास्त्रीय परिषद ने 2011 में अपनी साठवीं वर्षगांठ मनाई। 2500 सदस्यों के साथ यह वैश्विक दृष्टि से छोटी है परन्तु स्वयं के स्तर पर यह ताकतवर हो रही है। यह हमारी अभी तक की अधिकतम सदस्यता है और इसके अच्छे स्वास्थ्य के और भी कई चिन्ह हैं। अब हम चार पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं, हमारे इतिहास में सबसे अधिक अध्ययन समूह हैं, हमारे कार्यालय एवं प्रशासनिक कर्मचारियों की अधिकतम संख्या है और गत दो वार्षिक सम्मेलन भी अब तक के सबसे विशाल हुए हैं। इस वर्ष हमने 50 से अधिक कार्यक्रम किये और यह सब एक ऐसे देश में जो उच्च शिक्षा के बाजारीकरण, सार्वजनिक कोष से पोषित विश्वविद्यालयों के अन्त, विद्यार्थी शुल्क की शुरूआत के कारण बदनाम हो गया है और जो हानिकारक मितव्ययिता से गुजर रहा है। यह कोई संयोग नहीं है: ब्रिटिश समाजशास्त्र के लिए मितव्ययिता बड़ा व्यापार है।

लीड्स में आयोजित 2012 के सम्मेलन की थीम मितव्ययिता के युग में समाजशास्त्र थी। लंदन के बाहर यह हमारा सबसे बड़ा सम्मेलन था। मेरे अध्यक्षीय कार्यकाल के तीन वर्ष की समाप्ति पर मैंने मितव्ययिता के दौर में समाजशास्त्र के लोक–महत्व पर व्याख्यान दिया। अन्य प्लेनरी व्याख्यानों में, माइकल बुरावे और जिगमण्ट बाउमेन ने आर्थिक संकट के सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों को समझने में समाजशास्त्र के योगदान पर बहस की। स्टीफन एकरॉयड और रोजमेरी बट्ट ने यू.एस.और यू. के. की अर्थव्यवस्था के वित्तीयकरण के कारण उत्पन्न इस संकट की प्रकृति पर सीधा संवाद किया। हमारे यहाँ 24 अन्य देशों से प्रतिभागी थे और कई विषयों के ऊपर प्रस्तुतियाँ हुई। हमने 622 शोध पत्र स्वीकार किये और 62 की रिजर्व सूची थी।

ब्रिटेन में विश्वविद्यालय विषय के रूप में समाजशास्त्र पर मितव्ययिता का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। ऐसी आशंका है कि कुछ विभाग या तो बंद हो जायेंगे या सिकुड़ जायेंगे और यह भी डर है कि छात्रों के आवेदन कम हो जायेंगे जैसे ही विश्वविद्यालय में शुल्क के प्रभाव या

> **"मितव्ययिता ब्रिटिश समाजशास्त्र के लिए एक बड़ा व्यापार है"**

फिर स्पष्ट पेशेवर मार्ग की तरफ ले जाने वाले डिग्री विकल्पों के तरफ कदमों के कारण। उदाहरण स्वरूप स्ट्राथक्लाइड़ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का शिक्षण बंद हो रहा है और कई समाजशास्त्र विभाग विभिन्न अनुपातों में छात्र आवेदनों में कमी को रिपोर्ट कर रहे हैं। दूसरी तरफ, कई विभाग फल–फूल रहे हैं और कुछ नाटकीय रूप में छात्र आवेदनों में वृद्धि रिपोर्ट कर रहे हैं। कुछ विभाग नये स्थायी पदों के लिये विज्ञापन दे रहे हैं। मितव्ययिता का ब्रिटेन में समाजशास्त्र के प्रावधान पर क्या प्रभाव होगा, यह कहना अभी बहुत जल्दी है, हालाँकि बी.एस.ए. इस पर नजर रखे हुए हैं।

समाजशास्त्र के विषय पर मितव्ययिता का प्रभाव, हालाँकि, बिल्कुल भिन्न मुद्दा है और यहां परिस्थिति बहुत स्पष्ट है। हमारे 2012 के सम्मेलन ने दो सकारात्मक प्रभाव चिन्हांकित किये हैं। मितव्ययिता ने ब्रिटिश समाजशास्त्र में वर्ग–विश्लेषण और कार्य एवं उद्योग के समाजशास्त्र को सांस्कृतिक फेर के बाद पुनः सन्तुलित करने के बाद पुनर्जीवित किया है और लोगों का बी. एस. ए. के साथ सम्बन्ध को नवीकृत किया है। मुझे क्षमा करें यदि मैं यहां पर परवर्ती मुद्दे पर केन्द्रित करूँ। जैसे जैसे विषय अपने दोनों रूपों विषय वस्तु और बहुवैषयिक विद्यालयों में प्रशासकीय स्थिति में खण्डित होता है, ऐसा प्रतीत होता है कि समाजशास्त्री पेशेवर समाजशास्त्री के रूप में अपनी पहचान बनाये रखने के लिए बी.एस.ए. का इस्तेमाल कर रहे हैं। एक–विषयी समाजशास्त्र विभाग के लोप होने के कारण शिक्षक और शोधार्थी, अधिकांशतः छोटी संख्या में न पहचानने योग्य प्रशासनिक इकाइयों में फैले हुए हैं और बी.एस.ए. को प्रकार्यात्मक रूप से पुराने विभागीय संरचना के समकक्ष मानते हैं। इसमें अध्ययन समूह विभागीय सेमिनार का स्थान ले लेते हैं और बी.एस.ए. स्वयं उनकी पेशेवर पहचान का स्थान विशेष बनता है। बी.एस.ए. के अध्यक्ष निर्वाचित, जॉन होल्मवुड ने अपने कार्यकाल की थीम समाजशास्त्र की आवश्यकता रखा है और बी.एस.ए. उसके उदाहरण के रूप में अच्छे से कार्य करता है। ■

> योकोहामा कांग्रेस :

अधिक समान विश्व के लिए एक सेतु

कोइची हासेगावा, टोहोकु यूनिवर्सिटी, सेन्डई, एवं आईएसए 2014 विश्व समाजशास्त्र कांग्रेस की स्थानीय संगठन समिति के अध्यक्ष, योकोहामा, जापान

योकोहामा बे ब्रिज तथा द फ्लोटिंग पीयर जैसे कि वो कांग्रेस स्थल पैसीफिको योकोहामा से दिखाई पड़ते हैं।

शुजीरो याजावा , अध्यक्ष, जापानी समाजशास्त्र समिति के प्रभावी नेतृत्व में पिछली मई में जापानी समाजशास्त्रियों ने एक नेटवर्क स्थापित किया जिसमें अभी एक सौ पचास से ज्यादा सदस्य हैं, वे सुनामी आपादा जो कि मार्च 11, 2011 में आई थी, से निपटने के लिए शोध व जानकारी जुटाते हैं । विनाशकारी भूकम्पों, सुनामी एवं परमाणु शक्ति की दुर्घटना ने प्रत्येक प्रभावित क्षेत्र में सभी समाजशास्त्रियों के लिए सर्वेक्षण के प्रशासन सहित बहुत सा कार्य उत्पन्न कर दिया है।

> समाजशास्त्रियों के लिए चुनौतियां

इस विनाशकारी त्रासदी का मुकाबला करनें में समाजशास्त्र की क्या भूमिका और कार्य हो सकते हैं? हमें इतनी कठिन परिस्थितियों में किस प्रकार से सर्वेक्षण कार्य करना चाहिये? आपदा के शरणार्थियों से हम किस प्रकार सार्थक संवाद स्थापित कर सकते हैं और समाजशास्त्री होने के नाते हम कैसे उनको सम्बल दे सकते हैं ? अभी तक भी 360,000 लोग अपने घर वापस नहीं जा सकते हैं ।

>>

इनमें से अधिकांश लोग तंग एवं अस्थायी घरों में ठस कर साथ रह रहें हैं। अकेले फुकुशिमा क्षेत्र में अभी एक लाख पचास हजार लोग सरकार के आदेश के कारण या फिर अपनी स्वंय की स्वतन्त्र इच्छा से विस्थापित के रुप में रह रहे हैं ।

हम बहुत से समाजशास्त्रीय मुद्दों का सूक्ष्म, लघु, वृहद् स्तर पर सामना कर रहे है जैसे कि विज्ञान, तकनीक तथा राजनीति के मध्य संबंधों पर पुर्नविचार, समुदायों के पुनर्निमाण की शहरी योजना, कृषि, बागवानी, एवं मछली पालन का पुनःनिर्माण, तथा नये रोजगार सृजित करना इत्यादि। गैर सरकारी संगठन उन वृद्धों, बच्चों, विकलांगों व विदेशियों जिनके परिवार भौगोलिक अलगाव झेल रहे हैं और वह शरणार्थी जिन्होंने अपना परिवार, मित्र रोजगार सब कुछ खो दिया है के साथ कार्य कर रहे हैं। यहां पर शराब व घरेलू हिंसा जैसी समस्याएं हैं जो कि परिस्थिति को समझने के लिए लैगिक परिप्रेक्ष्य को केन्द्रित बनाते हैं। अतः बहुत सारे समाजशास्त्रीय नाटक, नायिकाऐं और नायक।

> जापानी महिलाओं का परमाणु विरोधी अधिग्रहण (Occupy) आन्दोलन

फुकुशिमा के परमाणु रिएक्टरों की वर्तमान स्थिति से हम में से बहुत से अत्यधिक रूप से परेशान हैं । स्थिति स्थिर है । विकिरिणों का स्तर तीस किलोमीटर के बाहर के दायरे व विशेषकर बहुचर्चित स्थानों में पूर्ण रूप से सुरक्षित है जैसे टोक्यो योकोहामा व मेरा क्षेत्र सेन्डई । मैं जहां कहीं भी जाता हूं मेरे पास विकिरण नापने का मीटर अवश्य साथ होता है । इस दुर्घटना के बाद मैनें सामान्य पाठकों के लिए *टूवर्डस ए पोस्ट–न्यूक्लियर सोसाइटी* नामक नई किताब प्रकाशित करवाई है।

फुकुशिमा व अन्य दूरस्थ इलाकों की महिलाऐं, बिजली प्रदान करने वाली कम्पनी की तथा देश की सरकार की, इस त्रासदी में भूमिका की खुले रुप से आलोचना कर रही हैं। वह अपने बच्चों व परिवारों की पूर्ण सुरक्षा, अपने नुकसान का पूरा मुआवजा व प्रभावित क्षेत्र के परिशोधन की मांग कर रही हैं । जन रैलियाँ, सार्वजनिक भाषण व अध्ययन बैठके प्रत्येक सप्ताहांत में आयोजित की जा रही हैं। सितंबर के मध्य से, अमेरिका में अधिग्रहण आंदोलन के बाद से, फुकुशिमा की महिलाऐं शांतिपूर्ण ढंग से आर्थिक व उद्योग मंत्रालय को अपने अधिकार क्षेत्र में ले रही हैं, उस मंत्रालय को जिसे कि वो परमाणु दुर्घटना के लिए दोषी मानती हैं । महिलाऐं वहां से जाने के लिए मना कर रही हैं जबकि पुलिस और सरकार ने जनविद्रोह के उत्पन्न होने के डर से उनके विरुद्ध बल प्रयोग नही किया है।

> अलग हुई दुनिया के लिए सेतु

3.11 की आपदा के बाद बंदरगाहों को खोलने के पहले योकोहामा शहर नें सुनामी के इतिहास की समीक्षा की तथा 300 वर्षों पूर्व आये एक छोटे कम तीव्रता वाले सुनामी के प्रतिवेदन के आधार पर बनाए गये सुरक्षा निर्देशों का पुर्नमुल्यांकन किया। एक सर्वोत्तम व्यवस्थित कॉग्रेंस की प्रस्तुति के लिए जापान की स्थानीय संगठन समिति, आईएसए कार्यकारी समिति एव जापानी सोशियोलोजिकल सोसाइटी के साथ गठ–बन्धन कर रही है । गोथेनबर्ग कांग्रेस 2010 की तरह हमारा लक्ष्य है कि हम पांच हजार प्रतिनिधियों से ज्यादा को आकर्षित कर सकें। हम समाजशास्त्रीयों से यह अपील करते हैं कि वे योकोहामा आएं तथा पुनर्जीवित एवं मजबूत जापानी समाज का अनुभव करें ।

पैसीफिको योकोहोमा (Pacifico Yokohama), जो कि इस कांग्रेस का आयोजन स्थल है से आप एक सुन्दर पुल देखेंगेः योकोहोमा बे ब्रिज, जो कि इस क्षेत्र का पहचान स्थल है । जैसा कि जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल ने घोषित किया था पुल हमारी जोडने की इच्छाओं की दृश्यगत रुप की अभिव्यक्ति हैं। मेरा विश्वास है कि हमारा समाजशास्त्रीय कार्य पूर्व एवं पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण, भूत तथा भविश्य, औरत और आदमी, प्रकृति तथा समाज को जोडने में एक सेतु की तरह है, दूसरे शब्दों में, अधिक समान विश्व के लिए समाजशास्त्रीय मतभेदों को पाटनें के लिए एक सेतु। योकोहामा इस सेतु को पार करने के लिए आपका इंतजार कर रहा है। ■

> इतालवी विश्वविद्यालय बिक्री के लिये

लॉरा कोराड़ी, केलाब्रिया विश्वविद्यालय, इटली

''इतालवी विश्वविद्यालय कदाचित् ही जीवित हैं। यह एक व्याधि व बढ़ते हुए सीमांतीकरण की दशा है जिसकी हमारे समकालीन इतिहास में कोई तुलना नहीं दिखाई देती। विश्व की सबसे पुरानी शैक्षणिक संस्था में से एक के संस्थागत कार्यशैली के लिए आवश्यक आर्थिक संसाधनों वर्तमान आर्थिक संकट के प्रकट होने से पहले ही, प्रचण्ड रूप से घटा दिये गये थे और यह भी तब जब अन्य औद्योगिक देशों की तुलना में प्रारंभ से ही इतालवी विश्वविद्यालय के पास कम वित्तीय संसाधन थे। अन्य विषय जो आर्थिक वृद्धि और बाजार के लिए महत्वपूर्ण समझे जाते हैं, को बढ़ावा देने के लिए मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के एक बड़े हिस्से को व्यवस्थित ढंग से अल्पाधिकार रखा गया। इस तरह के रूझान हमें यूरोप और अन्य देशों के साथ जोड़ते हैं। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों की बाजार–मूल्य के रूप में फायदेमंद होने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है–अन्यथा वे इसलिए प्रस्तावित नहीं किये जा सकते क्योंकि वे आर्थिक रूप से अरक्षणीय हैं।'' यह उद्धरण दो इतालवी प्रोफेसर, पियरो बेविलाक्वा और एंजेलो द 'ओरसी द्वारा लिखित L' Universita che Vogdianio (The University We Want) नामक दस्तावेज से लिया गया है और इस दस्तावेज को सैकड़ों इतालवी प्रोफेसरों, शोधार्थियों एवं "Precari" अर्थात् पदावधि बौद्धिक कर्मचारी, अधिकतर पोस्ट डाक्ट्रेट के अस्थाई पदों पर कार्यरत ने इलेक्ट्रानिक रूप से हस्ताक्षरित किया है।

2010 में इतालवी विश्वविद्यालयों में विभिन्न भूमिकाओं में Precari की संख्या 126,188 थी: 41,349 संविदा प्रोफेसर, 24,934

''मै अस्थिरता का भूत हूँ'' – अस्थिरता की एक सजीव अभिव्यक्ति जो कि एक नये खतरनाक वर्ग के रूप में समाज को डरा रही है।

एम. डी. प्रशिक्षु, 23,996 ट्यूटर और 17,492 शोध सहायक थे। कुल मिलाकर 2010 में 2008 की तुलना में 22,000 कम Precari थे[1] जो इतालवी विश्वविद्यालय से असम्बद्धता और मुक्ति की प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है, जिसे कल–दे–सेक (Cul-de-sac) के रूप में देखा जाता है जिसका प्रगतिशील निजीकरण के अलावा कोई अन्य भविष्य नहीं है।

विश्वविद्यालयों में स्पष्ट मात्रा में विद्यमान भ्रष्टाचार, जो कि जितना अखण्डनीय है उतना ही शर्मनाक, को उच्च शिक्षा की सम्पूर्ण सार्वजनिक व्यवस्था पर हमला करने व उसे ढ़हाने की दलील के रूप में काम

>>

में लिया गया है। ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण कानून एवं नियमों की एक श्रंखला जिसमें नवीनतम बदनाम गेलमिनी सुधार हैं, जिनका नामकरण उनके प्रणेता, बर्लुस्कोनी सरकार के शिक्षा मंत्री, विश्वविद्यालय एवं शोध, पर है, के द्वारा भी किया गया।

प्राणघाती बजटीय कटौतियों और पेशेवर प्रगति के कष्टसाध्य विराम के साये में जन्मा ऐसा सुधार लोकतांत्रिक अंग जैसे संकाय परिषद (जहां इस वर्ष के पूर्व तक, सभी पदावधि प्रोफेसरों और शोधार्थियों की भी निर्णय प्रक्रिया में भागेदारी थी) को खत्म और शैक्षणिक सीनेट की भूमिका का ह्रास कर, कुलाधिपतियों एवं पूर्ण प्रोफेसरों को समस्त शक्तियाँ देता है।

इतालवी विश्वविद्यालय व्यवस्था को एक और महत्वपूर्ण आघात *itinere* के प्रावधान से लगेगा। इस प्रावधान के द्वारा राजकीय डिग्रीयों की विधिक मान्यता का अन्त होगा जो विद्यार्थियों को व्यवस्था में नामांकन कराने से हतोत्साहित करेगा–वे विद्यार्थी जो पहले ही शिक्षण शुल्क में हुई अप्रत्याशित वृद्धि से संघर्ष कर रहे हैं। यदि यह कानून संसद द्वारा पारित हो जाता है तो गंभीर, चयनात्मक, प्रतिस्पर्धात्मक राजकीय संस्थाओं से उपार्जित डिग्रियों व किसी अन्य निजी, आनलाइन, तदर्थ विश्वविद्यालय से उपार्जित डिग्री में कोई अंतर नहीं रह जायेगा।

1968–1977 के प्रारंभिक छात्र आंदोलनों ने अधिकतर विद्यार्थी, कम्प्यूटर विद्यार्थी, कर्मचारी–विद्यार्थी को ही अपने प्रणेता के रूप में देखा और उनकी आवश्यकताओं पर फोकस किया। परन्तु दूसरे चरण में 1990 के दशक में, ला पान्टेरा (The Panther) छात्र आंदोलन ने विश्वविद्यालयों के निजीकरण और सामान्य शिक्षा व्यवस्था के द्वारा ज्ञान निर्माण को व्यापार की दुनिया में दासवत् करने के लिये आलोचना शुरू की। 2000 में 'प्रगतिशील' सरकार के द्वारा पारित तथाकथित बर्लिंग्यूर (Berlinguer) सुधार जिसके द्वारा उच्च शिक्षण और शोध संस्थाओं को मिलने वाली राज्य सहायता में कटौती कर, विश्वविद्यालयों को व्यापारिक दुनिया के साथ कायिक सम्बन्ध बनाने की तरफ धकेल कर विश्वविद्यालयों की वित्तीय स्वायत्तता में वृद्धि की है। ''सुधार'' ने संघर्ष के एक दशक का उद्घाटन किया जिसकी शुरूआत 2001 में रोम विश्वविद्यालय La Sapienza पर अधिग्रहण कर हुई जिसने यह दर्शाया कि कैसे मंत्रालय के रंग बदलने से नवउदारवादी नीतियाँ नहीं बदलती। विभिन्न प्रकार की सरकारों, दोनों

''हमारा भविष्य अभी है, जिन्दगी इन्तजार नहीं करती'' – विश्वविद्यालय प्रिकेरिएट का एक मुख्य नारा।

जो राजनैतिक रूप से मध्य वामपंथी और मध्य दक्षिण पंथी थी, ने सार्वजनिक विश्वविद्यालय का निजीकरण समान उत्कंठा से किया। बजटीय कटौतियों के कारण छात्र सेवाओं का स्तर घटाना, अनुदान, छात्रवृत्ति और अन्य प्रकार की वित्तीय सहायता में सिकुडन और गगन छूता शिक्षण शुल्क हुआ। इन सब ने मिलकर विश्वविद्यालय छात्रों के बीच प्रतिरोध और बखेड़ा पैदा किया और संगठन का पुष्पण किया। 2008 में L'Onda (The Wave) नामक व्यापक लामबंदी में एसोसियेट एवं पूर्ण प्रोफेसरों के साथ–साथ शोधार्थियों ने शिक्षण कार्य करने से मना कर दिया।

अन्ततः इस आंदोलन ने विश्वविद्यालय के पदावधि बौद्धिक कर्मचारियों के मुद्दे को भी सम्बोधित किया : Precari-शिक्षण कार्य के संदर्भ में कम वेतन पाने वाली श्रम–शक्ति जिसे हम Lumpen-ricercariat कहते हैं अर्थात् लैब सहायक, प्राध्यापक, अनुवादक, पाठक, सहायक जो आज एक नये सामाजिक विषय और अभिकरण के सामूहिक स्वरूप का निर्माण करते हैं।

आज बहुत से लोग ''दूसरे 1968'' का पूर्वानुमान लगाते हैं जिसका अर्थ है सफल जन आंदोलन। इसके बजाय यह हो सकता है कि विश्वविद्यालयी प्रतिरोध संकट के विरूद्ध होने वाले अन्य सामाजिक आंदोलन, बेरोजगारों के आंदोलन, कामगार जिनकी नौकरी छूट गई है, indignados जो नवउदारवाद और उसकी निजीकरण और बलात् वृद्धि के नुस्खे को नकारते हैं, संघटित हो कर जुड़ सकते हैं। समान जड़ वाले भिन्न मुद्दों को जोड़ने की ऐसी संभावना precariat के वृहद् आंदोलन के साथ कई छात्रों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के जुड़ने से, विशेषतः रोम में 30 मार्च (2012) के राष्ट्रीय प्रदर्शन और फ्रेंकफर्ट में अंतर्राष्ट्रीय लामबंदी (मई 16–19) के पश्चात्, पुष्ट होती है।

विरोधों पर नवीन जानकारी हेतु निम्न वेबसाइट पर विमर्श किया जा सकता है : http://www.ateneinrivolta.org/ (Universities in Revolt)। यहाँ आप दस्तावेज, प्रस्ताव, बैठकों की रिपोर्ट, विडियो एवं सूचनाओं को देख सकते हैं। यहाँ पर लैंगिक मुद्दों पर अधिक बल दिया जाता है क्योंकि विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत कैरियर, शैक्षणिक पदों और प्रशासन के उच्च स्तर में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व के संदर्भ में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव किया जाता है। सरकार द्वारा राजकीय विश्वविद्यालयों में 20 बिलियन यूरो की कुख्यात बजटीय कटौती करने का निर्णय सर्वाधिक महिलाओं – जिनका अनिश्चित कर्मचारियों में अधिक प्रतिनिधित्व है, पर प्रहार करता है। यह विशेष रूप से दक्षिणी महाविद्यालयों और सीमांतीय व्यक्ति जैसे GLBTT व्यक्तियों को हानि पहुंचाता है। ■

[1] Francesca Ruocco, "Il lavoro precario in Università" Pp.56-61 in *Inchiesta* n. 174, ottobre-dicembre 2011. Bari: Edizioni Dedalo.

> संयुक्त राष्ट्र में आई.एस.ए. :

अपराध और आपराधिक न्याय

रोजमेरी बारबरेट, जॉन जे कॉलेज ऑफ क्रिमिनल जस्टिस, न्यूयार्क, यू.एस.ए.

गत अप्रेल में मैंने वियना में संयुक्त राष्ट्र के अपराध निवारण एवं आपराधिक न्याय आयोग (CCPCJ-Commission on Crime Prevention and Criminal Justice) के 21वें सत्र में भाग लिया। मैं इसमें अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघ (ISA), जिसे गैर–सरकारी संगठन के रूप में सलाहकार का दर्जा प्राप्त है, के प्रतिनिधि के रूप में गई थी। मैं इस आयोग के सत्रों का अब दस वर्षों से निरीक्षण कर रही हूं। मेरा मानना है कि सामान्य स्तर पर संयुक्त राष्ट्र में समाजशास्त्रीय ज्ञान की महत्ती आवश्यकता है। समाजशास्त्र और अपराधशास्त्र, दोनों में ही CCPCJ को देने के लिए बहुत कुछ है।

संयुक्त राष्ट्र की CCPCJ आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC) की सहायक संस्था है। ECOSOC ने 1992 में आयोग का गठन किया था। इसकी अनिवार्य प्राथमिकता विषय–वस्तु है :

– राष्ट्रीय और पारदेशीय अपराधों, जिसमें संगठित अपराध, आर्थिक अपराध एवं काले धन को वैध बनाने और पर्यावरण संरक्षण में दण्ड विधि की भूमिका सम्मिलित है, पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाही;

– नगरीय क्षेत्रों में अपराध से बचाव, बाल अपराध और हिंसात्मक अपराध;

– दक्षता, निष्पक्षता और आपराधिक न्याय प्रणाली के प्रबंधन और प्रशासन में सुधार।

आयोग संयुक्त राष्ट्र अपराध निवारण और आपराधिक न्याय कार्यक्रम के क्रियान्वयन का विकास, निगरानी और समीक्षा तथा इसकी गतिविधियों के संयोजन को सुगम बनाने का कार्य करता है। आयोग, हर पाँच वर्ष में होने वाली अपराध निवारण एवं आपराधिक न्याय पर होने वाला संयुक्त राष्ट्र की कांग्रेस को कार्यवाहक और संगठनात्मक दिशा प्रदान करता है। आयोग संयुक्त राष्ट्र अपराध निवारण एवं आपराधिक कोष के शासकीय निकाय के रूप में कार्य करता है। यह यू. एन. कोष संयुक्त राष्ट्र के कार्यालय द्वारा नशा और अपराध (United Nations Office on Drugs and Crime (UNODC) द्वारा संचालित अपराध निवारण और अपराधिक न्याय के क्षेत्र में तकनीकी सहायता को बढ़ावा देने के लिए संसाधन उपलब्ध कराता है। CCPCJ में 40 सदस्य देशों में से तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए एक एक सदस्य निर्वाचित होता है।

आयोग, संयुक्त राष्ट्र अपराध निवारण एवं आपराधिक न्याय प्रोग्राम नेटवर्क, जिसमें कई अर्न्तप्रादेशिक, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय संस्थाएँ संयुक्त राष्ट्र के अपराध निवारण और आपराधिक न्याय प्रोग्राम की क्रियान्विति के लिए सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है, से सहयोग पाता है। (उदाहरण के लिए अमेरीका की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ जस्टिल प्रोग्राम नेटवर्क के कार्यों में योगदान देती है।)

प्रत्येक सत्र में परिचर्चा की एक विषय–वस्तु होती है। इस वर्ष यह विषय वस्तु – ''प्रवासियों, प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों के विरूद्ध हिंसा'' थी। यह विषय–वस्तु ''साल्वोडोर घोषणा'' जो कि तुर्की के सुझाव पर 2010 के यू. एन. अपराध कांग्रेस में प्रस्तुत हुई, से प्रेरित है।

केन्द्रीय अमरीकी प्रवासियों से पुलिस द्वारा उगाही या मेक्सिको के नशीली दवाओं के गिरोह द्वारा अपहरण, या एरीजोना रेगिस्तान में मरनो के विस्तृत रूप से फैली खबरों के कारण मरीन ले पेन ने फ्रांस के पिछले चुनावों में अप्रवासी विरोधी मंच प्रस्तुत किया; मध्य पूर्व एवं उत्तर–अफ्रीका क्षेत्र के आसपास के देशों में 'अरब स्प्रिंग' बगावत के शरणार्थियों की बाढ़ के खबरों ने इस विषय वस्तु को इस वर्ष अत्यन्त सामयिक बना दिया है। यह विषय–वस्तु एक दूसरे को काटती है क्योंकि यह एक तरफ प्रवासियों की तस्करी और अवैध व्यापार पर अपराध आयोग के कार्य से और साथ ही में यह संयुक्त राष्ट्र के अन्य निकायों द्वारा किये गये मानवाधिकार कार्य से सम्बन्धित है। यद्यपि एक तरफ अपराध आयोग प्रवासियों की तस्करी को प्रवासियों के विरूद्ध हिंसा से जोड़ता है, वहीं रोचक बात यह है कि फ्रास्वां क्रेप्यू, प्रवासियों

>>

के मानवाधिकारों का मुखर प्रतिवेदक, आयोग को स्मरण कराता है कि प्रवासियों की तस्करी आवश्यक रूप से प्रवासियों के विरूद्ध हिंसा करने वाली नहीं बल्कि कभी–कभी जीवन रक्षक गतिविधि भी हो जाती है। वे हमें कासाब्लांका फिल्म, जो कि मानवीय तस्करी घेरे के बारे में थी, की याद दिलाते हैं कि कैसे इस फिल्म ने मानवीय तस्करी के बारे में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किया था। परन्तु इन सब में समाजशास्त्रीय शोध कहाँ हैं?

संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रमों में आई.एस.ए. की भूमिका अवलोकनकर्त्ता, आई.एस.ए. अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी समिति को फीडबैक देने और जहां तक संभव हो सदस्य देशों के प्रतिनिधिमण्डलों को शोध इनपुट प्रदान करने की है। इस तथ्य के बावजूद कि अपराध आयोग और UNDOC इस बात पर कायम हैं कि उनके निर्णय साक्ष्य आधारित हैं पिछले कुछ वर्षों में अपराध आयोग को UNODC और प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा प्रदान की गई शोध पृष्ठभूमि में कमी आई है। अब तीन वर्षों से, आई.एस.ए. संयुक्त राष्ट्र अपराध आयोग की परिचर्चा की मुख्य विषय वस्तु पर साहित्य समीक्षा प्रस्तुत कर रहा है। आई.एस.ए. के सदस्यों को इस बात से जागरूक रहना चाहिए कि अकादमिक शोध पत्रिकाओं में छपे उनके अधिकतर लेख इस श्रोतासमूह (audience) तक नहीं पहुँचते हैं। अतः इस समूह के लिए अपनी शोध को पढ़ने योग्य व सुलभ बनाना अत्यन्त आवश्यक है। हमारे द्वारा प्रदत्त साहित्य समीक्षा मुख्य विषय से संबंधित वैश्विक साहित्य का वस्तुनिष्ठ सारांश उपलब्ध कराने का प्रयास करती है। इस सारांश को व्यापक रूप से परिभाषित और विश्व भर के समाजशास्त्रीय अनुसंधान के उदाहरणों से अलंकृत करने के साथ साथ ज्ञान के अन्तरालों पर विशिष्ट ध्यान दिया जाता है।

इस समूह के लिए अपने शोध को उपलब्ध कराने में क्या चुनौतियाँ हैं? संयुक्त राष्ट्र गैर सरकारी संगठनों द्वारा सदस्य देशों को प्रदान की जाने वाली सूचनाओं को ध्यानपूर्वक नियन्त्रण करता है। गैर–सरकारी संगठन लघु कथन प्रस्तुत कर सकते हैं और सचिवालय द्वारा पूर्व–अनुमोदित पर्चे बाँट कर प्रचार कर सकते हैं। वे सदस्य देशों से प्रत्यक्ष संपर्क कर मौखिक रूप से सूचनाएँ दे सकते हैं। परन्तु संयुक्त राष्ट्र अपने निर्णय लेने में पारदर्शी संगठन के रूप में नहीं जाना जाता है। हालाँकि अपराध आयोग के हफ्ते के दौरान कमेटी ऑफ द होल में प्रस्तावों पर बहस की जाती है, अधिकतर समझौता–वार्ताएं अनौपचारिक सत्रों, जो गैर सरकारी संगठन के लिये बंद होते हैं, में होती हैं। प्रतिनिधीमण्डल के प्रत्येक वर्ष बदलने के कारण और NGOs के पास प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों की डाक–प्रेषण सूची न होने के कारण सूचनाओं का प्रसारण कठिन होता है। कई प्रतिनिधि मण्डलों में NGOs के प्रकाशनों को पढ़ने में अधिक रूचि नहीं होती। संयुक्त राष्ट्र में परामर्शदाता के दर्जे वाले अधिकतर गैर सरकारी संगठन मुद्दे–आधारित और उनकी हिमायत करने वाले होते हैं। वे आई.एस.ए. के जैसे वैज्ञानिक और पेशेवर संघ नहीं हैं। अतः सदस्य देश गैर सरकारी संगठनों से चौकस रहते हैं। इससे अतिरिक्त वार्त्ता के अभाव में, प्रदत्त सूचनाओं की उपयोगिता प्राप्तकर्ता की साख पर निर्भर होती है। इस वर्ष जहाँ हमने अपने पर्चे अंग्रेजी और फ्रेंच में बांटे थे, इन्हें संयुक्त राष्ट्र की सभी भाषाओं में अनुवाद करना मददगार होगा।

अपराध आयोग यू. एन. की मुख्य संस्था है जो कि अपराधिक न्याय संस्थानों के लिये अन्तर्राष्ट्रीय मानकों एवं आदर्शों का निर्माण करती है तथा स्वस्थ राष्ट्रों को अपराध न्यूनीकरण नीतियों को स्वीकार करने के लिये सक्षम बनाती है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान से आयोग के कार्यों को प्रभावित करने से उसके परिणामों को बड़ी सीमा तक प्रभावित किया जा सकता है। ■

> क्या आप आईएसए के ई–सिम्पोजियम का सम्पादन करने के इच्छुक हैं?

जेनीफर प्लाट, ससैक्स विश्वविद्यालय,यू.के. तथा आईएसए उपाध्यक्ष प्रकाशन, 2010–2014

आईएसए के बहुत से सदस्य जानत होंगे कि आईएसए के सदस्यता परिलाभों में से एक इलेक्ट्रोनिक जर्नल जो कि शुरुआत में आईएसए ई–बुलेटिन कहलाता था लेकिन अभी हाल ही में आईएसए ई–सिम्पोजियम बना दिया गया है का सम्पादन विनिता सिन्हा सन 2005 से कर रही है। यह परिवर्तन वैब साईट पर डिजिटल बदलाव को चिन्हित करता है ताकि पाठकों से और अधिक अन्तक्रिया की जा सके तथा साथ ही अलिखित दृष्य तथा श्रवय योगदानों के शामिल करने की सम्भावना हो जैसा कि नवीनतम अंक में जहीर बाबर के लेख ''टोरन्टो पर अधिकारः एक चित्र–निबन्ध'' को शामिल किया गया है।

अब जब कि विनिता ने नई व्यवस्था की स्थापना कर दी है उसके विशिष्ठ संस्थापक कार्यकाल को सम्भावित नये सम्पादक को उत्तराधिकार में देने का समय आ गया है। रुचिकर योगदानों की विस्तृत सामग्री जर्नल में प्रकाशित हो चुकि है तथा भविष्य के लिए निश्चय ही और अधिक सामग्री उपलब्ध होगी। शायद आप इसे पहचानने तथा विकसित करने की जिम्मेदारी लेना चाहेंगे या किसी ऐसे साथी को जानते होंगे जो कि यह नेक काम कर सके? सम्पादक के लिए आवेदन जुलाई 2013 से आमंत्रित हैं। आवेदन करने के लिए कृपया आईएसए की वैब साइट देखें।

> ऐरिजोना रेगिस्तान : प्रवासियों के लिए मृत्यु जाल

इमिन फिडन एलकियोग्लू, केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी, बर्कले, अमेरिका

उस पल जब मैंने कैमरे की "क्लिक" की आवाज सुनी तब मैंने कैमरे को मजाक में फेंक दिया। वह मानवीय अपघटन की दुर्गंध पूरे दिन भर मेरे साथ रही। वह चित्र जो मैंने ,खींचा था वह ऐरिजोना, टस्कन के चिकित्सकीय परीक्षण अधिकारी की संरक्षित ईकाई का था। सफेद बैग में कई दर्जन मनुश्य के शव थे,यह उन प्रवासी आदमी औरत व बच्चों के थे जो कि बिना दस्तावेज की प्रकिया के अमेरिका के दक्षिणी ऐरिजोना के "मृत्यु रेगिस्तान" में प्रवेश कर रहे थे ।

इस फोटो से यह प्रतीत होता है कि किस प्रकार एक राज्य "अनचाही" जनसंख्या से उनके जन्म व मृत्यु पर संवाद स्थापित करता है । सन् 1990 से सीमा पर सैन्यीकरण की प्रकिया शुरु है जबकि उस सुरंग से प्रवासी भाग जाते हैं पृथक, बिना अस्पताल वाले भू भाग प्रदेश "ऐरिजोना" से शहर की ओर। यदि पार करने वाले लोग जिंदा रहने की जिजीविशा को बचा कर अपने स्थान पर पहुंच जाते हैं तो वे अपना बचा हुआ जीवन पकडे जाने के भय से या रेगिस्तान में मृत्यु के डर से अपनी मातृभूमि व अपने

परिवार से बिना मिले बिताते हैं। उसी समय अमेरिका में उनकी उपस्थिति कानून के विरुद्व हो जाती है तथा देश से निकालने के बाद व परिवार से अलग रहकर उनका प्रतिदिन का जीवन संकट में बीतता है ।

यदि प्रवासी की मृत्यु हो जाती है तो राज्य अपनी प्रभावी भूमिका में उन्हें अमेरिका में रहने देता है । उनके शव बार्डर पट्रोल एजेण्टों द्वारा चार पहिया गाडी के डिब्बे में

चिकित्सकीय परीक्षण अधिकारी के पास पहुंचा दिये जाते हैं। यहां व्यक्तिगत पहचान करने के लिए शव को साफ किया जाता है तथा पहचान के निशान के लिए उनकी परिरक्षित त्वचा को अवरक्त किरणों के स्कैनर के सामने रखा जाता है जिससे उनके चिन्ह , उनकी दांतों के विन्यास तथा हड्डियों के आधार पर अंतर किया जाता है । कोई भी सूचना विदेशी सलाहकार तथा मानवाधिकारी संगठन द्व ारा त्रिकोणीय प्रकार से जांची जाती है यह संगठन उनके परिवार से जुडे रहते हैं । इसी बीच शव को अस्पश्ट नाम का लेबल लगा दिया जाता है जैसे : 'जॉन' और 'जॉने डे' कभी – कभी जब जॉन' और "जॉने डे" जैसे शव जो रेगिस्तान में रखे रहने के कारण चूरे में बदल जाते हैं तो उनका लिंग निर्धारित नहीं किया जा सकता है तब वे शव को शीतलक में रखते हैं। राज्य शवों के परिवहन, संग्रहण तथा रख – रखाव पर काफी खर्चा करता है लेकिन यदि अंततः उनके शवों को नहीं पहचाना जाता तब राज्य के उच्च वर्ग के शमशान में अनुबंधित अंत्येश्टि किया करने वाली कम्पनी के द्वारा उनको दफना दिया जाता है । क्या राज्य को उनकी मृत्यु पर सम्पूर्ण दाह संस्कार की क्रिया के निवारण के लिए अपने संसाधन नहीं खर्चने चाहिए। ■